वर्ष 27 | मागसर-पौष | दिसम्बर-2022 | अंक 12 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

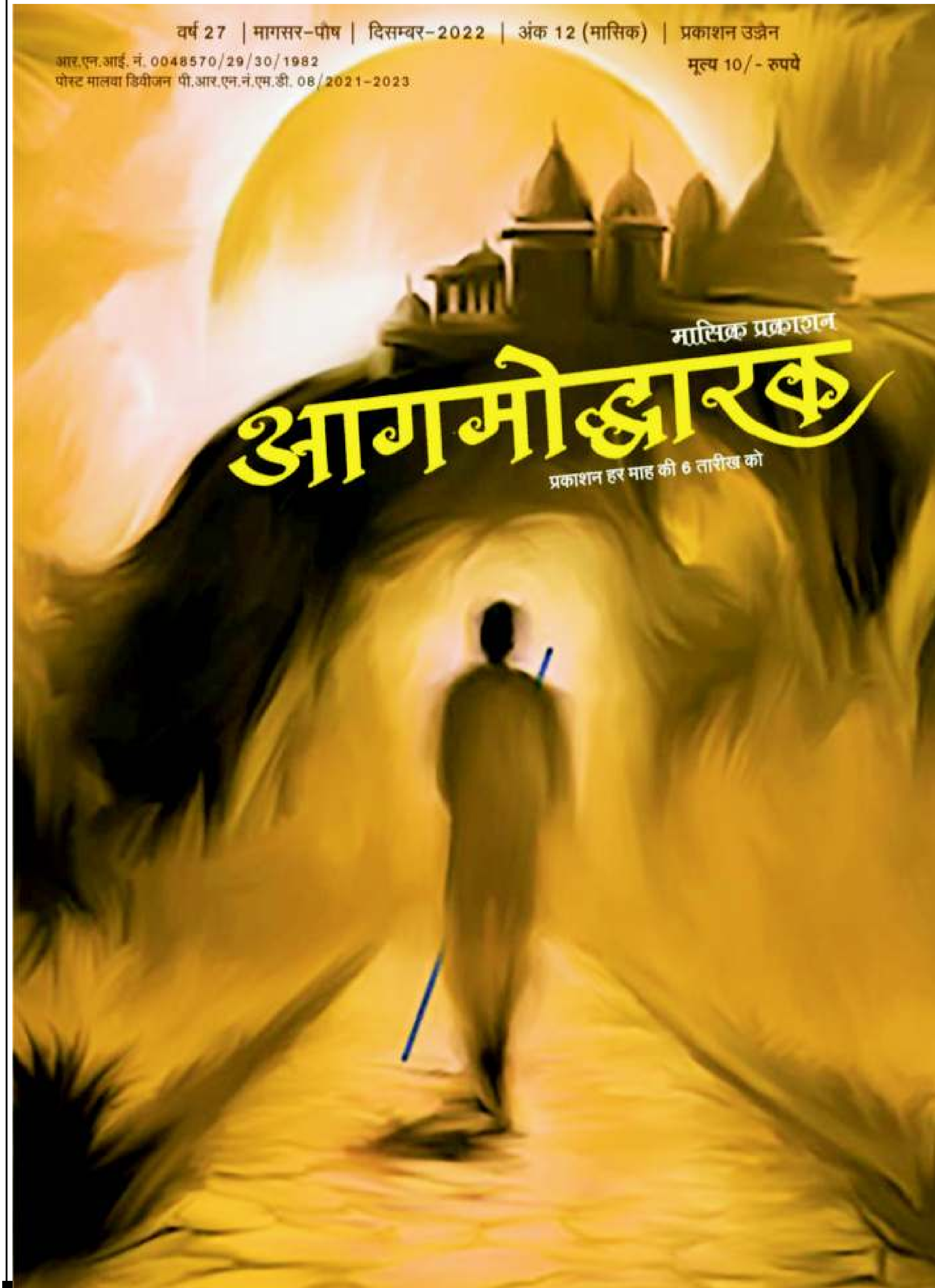

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

प्रेमरसः- *कुंए के पानी को चाहे लोटे से भरो, नल से भरो या चड़स से भरो पानी के रुप में कोई फर्क नहीं आयेगा। सभी भिन्न-भिन्न साधनों से निकलनेवाला जल एक रुप, रंग और स्वाद का होगा। हमारा हृदय भी कुए के समान है भाषा, लेखन आदि साधन है। यदि हमारे हृदय में विशालता है, प्रेम है, रस है तो हमारी वाणी, हमारी लेखनी और हमारी भाषा रसीली होगी, परन्तु हृदय में कटुता है, संकीर्णता है, तिरस्कार का भाव है तो हमारी वाणी में, हमारी भाषा में, हमारे व्यवहार में भी वही कटुता संकीर्णता और तिरस्कार की भावना झलकेगी।*

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

वोच्छिन्द सिणेहमप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणिणं।
से सव्वसिणेहवज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

जैसे कमल शरद ऋतु के निर्मल जल से भी निर्लिप्त रहता है, वैसे ही तू अपनी सारी आसक्तियों को छोड़। हे जीव ! क्षणभर के लिए भी प्रमाद मत कर।

- उत्तरा. सूत्र, 10.28

पाथेय *हे परम विजयिनी शक्ति ! हे पवित्रता, सुन्दरता एवं उत्कृष्ट प्रेम की विधात्री शक्ति ! कृपा कर कि यह मेरा समूचा अस्तित्व, यह शरीर, अपनी एकनिष्ठ श्रद्धा भावना से पहुंच सके तेरे समीप, और स्वयं को एक विनम्र एवं समर्पित भावना से सौंप दे तेरे हाथों में यद्यपि यह नहीं हुआ है अभी तक तैयार, अभी नहीं है अधिक कुशल एवं परिपक्व तेरी अभिव्यक्ति के लिए किन्तु इसे दृढ़ निश्चय के साथ कि एक दिन, तू अवश्य ही निष्पक्ष करेगी वह अपेक्षित चमत्कार, और प्रकट होगी अपने पूर्ण ऐश्वर्य के साथ हमारे समक्ष। हम तेरी ओर उन्मुख होकर मौन भावना से, तुझे निवेदित करते है अपने नमस्कार ! हे प्रेम की परम शक्ति, तू विशाल है और अद्भूत है, सर्व पदार्थो पर तू जगमगा रही है, तेरी सिद्धी को मुहूर्त समीप है और समस्त प्रकृति एक महत्तर एकाग्रता में निमग्न है।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 मागसर-पौष 2022 अंक-12

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- जगत कल्याणक है परमात्मा के कल्याणक (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- महामंगलकारी 45 आगम के नाम, कुछ बात बनें...!- सुधीर पटवा 6

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. 7-8

6- जैन और सनातन भारतीय संस्कृति में अक्षय तृतीया का महत्व क्यों है ? सुधरें-सुधारेंगे-रामेश्वरप्रसाद गुप्ता ''इंदु'', स्थित-प्रज्ञ 9-10

7- ऋद्धि से विगलित दशपुर नरेश संयमी बने-शांतिलाल सगरावत , एक रस 11

8- सेवा करने का लाभ अवश्य लें, भावना-ज्ञान 12

9- जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी वागड़के विभूषण है- अनोखीलाल कोठारी 24 तीर्थंकरजी के 1452 गणधर परिचय, विचार मंथन 13-14

10-(62 वें जन्मदिन पर विशेष)- सागर समुदाय के हर्ष सागरजी.... डॉ. सुभाष जैन 15

11-पद पाने के बाद मुझे अपनी मर्यादा और कर्त्तव्य का ध्यान है- आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.- डॉ. सुभाष जैन, अभिमानी का सर नीचा- एस.सी.कटारिया 16-17

12-पुत्रों के विषय में श्राविका की उच्च भावना, सच्चे गुरु, वास्तव में सुखी 18

13-सिद्धशिला-सचित्र जैन, धर्मनिष्ठ विद्यार्थी, दुःख का कारण 19-20

14-संघपति का आदर सत्कार करने से रोग का नाश...., अध्यात्म मिले,- आवेश मिटे, शुभ-अशुभ 21

15-शिक्षाशतदोधक-श्रुतरत्न गणिवर्य श्री वैराग्यरति विजयजी म.सा., मानवता, धर्म के प्रति आस्था 22-23

16-वर्षीतप की महिमा.... जिन शासन की गरिमा- मोहनलाल उमेदमलजी जैन (लुणावा), जैन अक्षय-तृतीया और भारतीय मुद्रा, प्रज्ञा और प्रेम, खिड़की 24-25

17-वर्गपहेली- 331 - जयंतीलाल जैन 26

18-ज्ञान गंगोत्री- 331-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.,भक्ति, कर्म एवं ज्ञान-योग 27

19-शासन-समाचार 28-41

20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक, छुटने का अवसर.... 42

संपादकीय

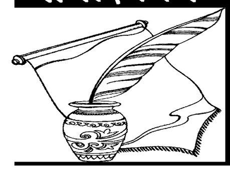

जगत कल्याणक है परमात्मा के कल्याणक

विश्व वंदनीय 24 तीर्थंकर परमात्मा के पंच कल्याणक जगत के कल्याण का प्रकटीकरण है परमात्मा के कल्याणक जब हम मनाते है तो इस बात का अनुभव अनेक धर्मिष्ठों को होता है। इस माह भी श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक हम मनायेंगे। हमारे यहां कल्याणक के माध्यम से पाषण को संस्कारित कर पूज्य बनाने की एक नितांत धार्मिक एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, अनुष्ठान है। तीर्थंकर परमात्मा के जीवन की पुनरावृत्ति की संजीव प्रस्तुति आत्म कल्याणक का भाव जाग्रत कर देती है। यही नहीं तीर्थंकर परमात्मा की पूर्ण इतिवृत भी स्पष्ट कर देती है कि अपने पूर्ण पर्याय में अपने जीवन की कठोर साधना और तप से उज्जवल करके परम पुरुषार्थ के बल पर मानव से महामानव सामान्य रुप से विशिष्ट एवं नर से नारायण बने परमात्मा ने अपना लक्ष्य आत्मकल्याण एवं आत्म विश्वास ही रखा था। परमात्मा ने विश्व को उस पथ का सच्चा स्वानुभूति स्वरुप अपनी दिव्य देशना से बतलाया। परमात्मा के कल्याणक के मंगल आयोजनों को देखकर मानव को इनके महत्व एवं इनकी सार्थकता का ज्ञान हो जाता है। कल्याणक अर्थात् सर्वोत्तम वस्तु जिस प्रकार सर्व धातुओं में स्वर्ण आज भी उत्तम है इसी प्रकार समस्त सांसारिक अभ्युदयों जो सर्वश्रेष्ठ है उसे कल्याणक कहते है भावना शुद्ध हो तो कंकर में शंकर, नर में नारायण और पाषाण भी तीर्थंकर बनकर पूज्य हो जाते है, सब कुछ हमारी पवित्र भावना पर निर्भर है, यदि हम भी मन से आस्था और विश्वास को मजबूत करते जायेंगे तो जीवन में हर क्षण परमात्मा के भव्य स्वरुप प्राकट्य का दर्शन और दिव्य अनुभूति कर सकते हैं, इसमें कोई शंका नहीं है। सच्चे अर्थ में हम देखेंगे कि -पत्थर से आकर दिये जाने वाले भगवान, मूर्ति के रुप में प्रकट करनेवाला कलाकार अगर उस पत्थर को धनुष हाथ से दे दे तो राम चक्र अंगुली में घुमा दे तो कृष्ण और हाथ खाली होकर जीवन मात्र के कल्याण की कामना में जुड़ी हुई मुद्रा में बन जाए तो वह मूर्ति तीर्थंकर का रुप पा जाती है। मूर्तियों के भगवान तो हमारे बनाये हुए है, हमारे बनाये हुए भगवान का इस भाव से ध्यान करो कि उन्होंने ` हमे बनाया है। परमात्मा के प्रति हमारा यह भाव ही हमारा कल्याण कर देगा।

परमात्मा के कल्याणक की बात करते हुए हमें इस बात पर विशेष रुप से गौर करना होगा कि- वर्तमान युग में आज सभ्यता और मानव जाति का चार विषम आपदाओं के भयंकर संक्रमण से सामना हो रहा है। पहली आपदा है चारित्रिक अवमूल्यवन की , दूसरी संत्कार्य करने का अहंकार तीसरी है, दुष्कृत के प्रति पश्चाताप का अभाव और चौथी आपदा है, साम्प्रदायिक, जातिगत, दलगत, राजनीति एवं राष्ट्र गत उन्माद की जकड़न तथा संकीर्णता। इन चारों आपदाओं के निराकरण के उपायों पर दृष्टिपात करें तो एक चित्र स्पष्ट रुप से उभर कर सामने आता है और वह है परमात्मा की सच्चाई को स्वीकार करने और प्रभु के बताये मार्ग पर चलना।

भारत भूमि ने आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति जागकर जीने के न केवल सूत्र दिये है बल्कि आध्यात्मिक एवं चेतनागत मूल्यों को स्वयं अपनी चर्चा का अंग बनाकर जीवन जीने के सिद्धांत परमात्मा ने दिये है। अगर आज के युग में परमात्मा श्री प्रभुवीर प्रकट हो जाये तो प्रभु किसी तीर्थ मंदिर या धर्म स्थान में नहीं अपितु आतंकवादियों के बीच अहिंसा का दिव्य संदेश देने के लिये उन्हीं के बीच अवतरित होते आज के युग में प्रभुवीर अगर जन्म ले तो छल, कपट, झूठ और हिंसा के बीच ही रहकर विश्व को अहिंसा का संदेश देकर अहिंसामय विश्व का निर्माण करते। हम सब जानते है, दीपों के लिये लड़ना नासमझी है, कीमत तो ज्योति की होती है, प्रकाश की होती है।

परमात्मा श्री प्रभुवीर ने कही भी अपने संदेश में मानव का धार्मिक बनने की बात नहीं की है, परमात्मा के सभी संदेश हमें एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा और मार्गदर्शन देते है, अगर हमने अपनी अंतरंग खोट को दूर करने के परमात्मा के विचारों को आत्मसात कर लिया तो जीवन बदलते देर नहीं लगेगी, परमात्मा के शासन में हजारों हजार ऐसे उदाहरण है जिसमें प्रभुवीर को समझ लेने के बाद वे सब हमारे लिये प्रेरणा स्त्रोत बन गये है, हम अपने पाषणकारी मन को प्रभु का सानिध्य पाकर आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ा सकते है। एक बार आध्यात्म की प्यास जाग गई तो जीवन का कल्याण होने में देर नहीं लगेगी।

जीवन एक परिवर्तन है, अपने लिये अपने आप में जीने से जीवन सार्थक नहीं होता, अपने लिये, स्वयं के लिये तो पशु-पक्षी भी जीते है लेकिन अगर हमने अपने सामर्थ का उपयोग धर्म समाज के लिये करे, कोई ऐसा कार्य करो कि आपके जाने के बाद भी वर्षो तक आपको याद रखे। यही कल्याण का मार्ग है, प्रभु के कल्याणक से यही प्रेरणा मिलती है जिन आत्माओं ने संसार में करुणा, वात्सल्य बरसाया वे ही इस जगत में श्री महावीर श्रीराम, श्री कृष्ण बनकर पूजित हुए है, परमात्मा के कल्याणक से हमारे मन भाव में भी आत्म कल्याणक के साथ जगत के कल्याण का भाव जाग्रत हो। जैन संस्कृति में अपनी आराधना, साधना, तप का श्रम करके कर्मक्षय करके तीर्थंकर पद प्राप्त करनेवाले भगवान ही पूज्य है। अपनी आत्मा का आध्यात्म के माध्यम से विकास कर भगवत सत्ता को प्रकट किया जा सकता है, मनुष्य जन्म शास्त्रों में दुर्लभ बतलाया है, अतः हमारा जन्म सार्थक हो इस हेतु तीर्थंकर परमात्मा के जीवन के सभी प्रसंग हमारे लिये पूज्य उपादेय है, प्रभु के कल्याणक, प्रभु की वाणी हमें मार्ग भ्रष्ट होने से बचाये इस भाव से हमारा भी कल्याण हो वह भावना जीवन में रखे इसी मंगलभाव के साथ !**-डॉ.सुभाष जैन**

महामंगलकारी 45 आगम के नाम

11 अंग सूत्रः-

1- श्री आचरांग सूत्र
2- श्री सूत्रकृतांग सूत्र
3- श्री स्थानांग सूत्र
4- श्री समवायांग सूत्र
5- श्री भगवती सूत्र
6- श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र
7- श्री उपासक दशांग सूत्र
8- श्री अंतकृत दशांग सूत्र
9- श्री अनुत्तरोपपातिक सूत्र
10-श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र
11-श्री विपाक सूत्र

12 श्री उपांग सूत्रः-

1- श्री औपपातिक सूत्र
2- श्री राजप्रश्नीय सूत्र
3- श्री जीवाभिगम सूत्र
4- श्री प्रज्ञापना सूत्र (पन्नवणा)
5- श्री सूर्य प्रज्ञप्ति
6- श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति
7- श्री जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति
8- श्री निरयावलीका सूत्र
9- श्री कल्पावसतिका सूत्र
10-श्री पुष्पिका सूत्र
11-पुष्प चूलिका सूत्र
12-वन्हिदशा सूत्र

10 पयन्नाः-

1- श्री चतुःशरण प्रकीर्णक सूत्र
2- श्री आतुर प्रत्याख्यान सूत्र
3- श्री महाप्रत्याख्यान सूत्र
4- श्री भक्तपरिज्ञा सूत्र
5- श्री तदुलवैचारिक सूत्र
6- श्री संस्तारक सूत्र
7- श्री गणिविद्या सूत्र
8- श्री गच्छाचार पयन्ना सूत्र
9- श्री देवेन्द्रस्तव सूत्र
10-श्री भरण समाधि सूत्र

※ कर्मों से ही पहचान होती है इंसानों की.... महंगे ''कपड़े'' तो ''पुतले'' भी पहनते हैं दुकानों में !!

6 छेद सूत्रः-

1- श्री निशीथ सूत्र
2- श्री महानिशीथ सूत्र
3- श्री दशाक्षुतस्क्रंध सूत्र
4- श्री बृहत्कल्प सूत्र
5- श्री व्यवहारकल्प सूत्र
6- श्री जीवकल्प सूत्र

4 मूलः-

1- श्री आवश्यक सूत्र
2- श्री दशवैकालिक सूत्र
3- श्री उत्तराध्ययन सूत्र
4- श्री पिण्डनिर्युक्ति सूत्र

2 श्री सूत्र :-

1- श्री नंदी सूत्र
2- श्री अनुयोगद्वार सूत्र

कुछ बात बने...!

※ सुधीर पटवा, एड.कुकड़ेश्वर

खून के रिश्ते भी पराये से हो गये हैं आज,
मिठास रिश्तों में घुले तो कुछ बातें बने।
मिठाईयां तो हर रोज प्लेटों में सजती हैं,
मन में मिठास घुले तो कुछ बात बने।।
मुंडेरों पर दिये जलाते तो बीत गई जिन्दगी,
हृदयों के अंधेरे मिटे तो कुछ बात बनें।
भरे परिवार में भी आज अकेला क्यों है बुढ़ापा,
थोड़ी ही सही पूछ परख हो तो कुछ बात बने।।
दिल से दिल की दूरियां बढ़ती जा रही है दिनों दिन,
ये दूरियां मिटे तो कुछ बात बनें।
महाभारत बनकर के रह गई है जिन्दगी,
भरत मिलाप हो तो कुछ बात बने।।
तलवार की धार पर चलना हो गया है जीवन,
पल थोड़े खुशी के मिले तो कुछ बात बनें।
गिले शिकवें छोड़कर गले लगलें सुकून से,
छेड़े तराने प्रेम के तो कुछ बात बनें।।

पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

6 भेद से मिथ्यात्व का स्वरुपः-

लौकिकः- 1- देवगति 2- गुरुगत 3- पर्वगत।

लोकोत्तरः- 1- लोकोत्तर देवगत्त 2- गुरुगत 3- पर्वगत।

लोक लोकोत्तर भेदे षड्विध, देव-गुरु वली पर्वजी,
शक्ते तिहां लौकिक त्रण आदर, करतां प्रथम निगर्वजी॥
लोकोत्तर देव माने नियाणे, गुरु ते लक्षणहीना जी,
पर्वनिष्ठ इलहोकने काजे, माने गुरुपद लीना जी॥

उपाध्यायजी ने सज्झाय में इस तरह लौकिक और लोकोत्तर के भेद से 6 प्रकार के मिथ्यात्व बताए है। लौकिक अर्थात् लोक व्यवहार में प्रचलित जो देव (भगवान) और गुरु-पर्वादि मानना यह लौकिक मिथ्यात्व का स्वरुप हुआ।

1- लौकिक देवगत मिथ्यात्वः- रागी-द्वेषी, अल्पज्ञ, संसारी को भगवान के रुप में मानना मोहादि दोषग्रस्तों को भगवान मानना वह यह मिथ्यात्व कहलाता है।

2- लौकिक गुरुगत मिथ्यात्वः- कंचन-कामिनी के भोगी संसार के सगी, भोगासक्त, कंदमूल के भक्षक, अनाचारसेवी पाप लीला में मस्त, तथा तप-त्यागादि रहित एवं बाबा जोगी-फकीर-सन्यासी-तापस आदि जो 36 गुण धारक न होते हुए भी उन्हें गुरु के रुप में मानना यह इस प्रकार का मिथ्यात्व हुआ है।

3- लौकिक पर्वगत मिथ्यात्वः- जो लोक में प्रसिद्ध है, ऐसे लौकिक त्यौहार जिसमें तप-त्याग साधना कुछ भी नहीं है सिर्फ खाना-पीना और मनोरंजन ही एक मात्र उद्देश्य है जैसे होली-बलेव आदि पर्वो को मानना, मनाना यह इस प्रकार का मिथ्यात्व है।

4- लोकोत्तर वगत मिथ्यात्वः- लोकोत्तर देवाधिदेव वीतराग सर्वदोषरहित-राग द्वेष रहित स्त्री-शास्त्रादि संबंध रहित सर्वज्ञ जैसे भगवान को मानकर भी इहलोक के सुख की आकांक्षा, सब प्रकार के संसार के सुख मिले, अच्छी स्त्री मिले, संतान की प्राप्ति हो, धन-धान्य-संपत्ति और सत्ता-पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करनी, ये सब देने वाले है, इस दृष्टि से मानना तथा मांगना, या इस इच्छा से ऐसे वीतरागी की मानता रखनी, बाधा रखनी इत्यादि लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व कहलाएगा। लोकोत्तर के तीनों भेद में मान्यता सही है देव-गुरु-धर्म का स्वरुप सही जानता है परन्तु आराधना-उपासना जिस हेतु से करता है वह हेतु गलत है। वह रीत विपरीत है। जैसे रसोई में हलवा-पुड़ी-चाय आदि बनानी है। आपको हलुवा का स्वरुप अच्छी तरह मालूम है परन्तु बनाने की रीत या विधि सुव्यवस्थित मालूम नहीं होगी और जैसे-तैसे एक भगोने में आटा-घी-शक्कर-पानी मिला देंगे तो हलुवा नहीं बनेगा। अतः रीत या तरीका सही न जानने पर सब बाजी बिगड़ जाएगी। उसी तरह लोकोत्तर-देव-गुरु-धर्म की प्राप्ति आपको जरुर हुई है परन्तु यदि उपासना-आराधना की रीत या पद्धति अच्छी तरह नहीं जानते हो, और आराधना की जो रीत बताई है उसी तरह से नहीं आराधोगे तो सम्यग् देवादि भी मिथ्यात्व के निमित्त बन जाएंगे।

5- लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्वः- पंच महाव्रतधारी संसार के त्यागी, तपस्वी, कंचन-कामिनि के त्यागी 36 गुणधारी साधु मुनि महाराजाओं को मानना। यहां मानना तो सही है। अतः सही सच्चे साधु को गुरु मानते हुए भी उपासना की रीत और हेतु विपरीत है, वे जब संसार के त्यागी है तो उनके पास संसार के सुख सभी मिले इस हेतु से आर्शीवाद लेना, शादी हो जाय, स्त्री अच्छी मिले, पुत्र-संतान की हो, सत्ता-संपत्ति की प्रतिष्ठा अच्छी प्राप्त हो, मैं जेल में से छूट जाउं, सजा से मुक्त हो जाउं, इस केस में जीत जाउं, घोड़े की रेस में जीत जाउं, इस संकट से बच जाउं। मेरे रोग मिट जाए, मेरी तकलीफ दूर हो जाए इत्यादि संसारिक सुख-भोगों की अपेक्षा से साधु-संतों को मानना, पूजना, वंदना करनी या आर्शीवाद इसी के लिए लेना यह सब मिथ्यावृत्ति कहलाती है। इसमें भी स्पष्टरुप से राग का, संसार का पोषण होता है। अतः इस प्रकार की मिथ्या रीत का भी त्याग करना हितावह है।

6- लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्वः- सर्वश्रेष्ठ कर्मनिर्जरा कारक-मोक्ष प्राप्ति के सहायक ज्ञानपंचमी, मौन एकादशी, पौष दशमी, आयंबिल की नौपद की ओली तथा श्री पर्युषण महापर्व एवं संवत्सरी महापर्व की आराधना भी जो कर्मक्षय के लिए करनी चाहिये। उसके बदले उस स्वरुप को छोड़कर जल्दी शादी हो जाय इसलिए आयंबिल की ओली करना, अच्छा पति मिले इसलिए तप करना, संतान प्राप्ति के लिए किसी पर्व की आराधना-तपश्चर्या करनी, कुटुम्ब क्लेश

की शांति हो इसलिए, स्वर्ग प्राप्ति, सुख-भोगों की प्राप्ति, देह सौंदर्य-रुप, स्वरुप अच्छा मिले इस हेतु से ऊंचे पर्वो की आराधना सांसारिक इच्छाओं से सुख के हेतु से करनी यह इस प्रकार का मिथ्यात्व है। अतः यह भी सर्वथा त्याज्य है। उपरोक्त तीनों लोकोत्तर देव-गुरु-वर्व गत मिथ्यात्व धार्मी आत्मा को भी लग सकते हैं, यदि वह इस विधि से करें या इस हेतु से करें तो ! अतः जैसी ऊंची कक्षा देव-गुरु-धर्म की है उसे उसी ऊंची कक्षा की रीत विधि तथा हेतु से आराधना भी चाहिये।

देव-गुरु धर्म के स्वरुप में मिथ्यात्वः-

अदेव देव बुद्धिर्या, गुरुधीरगुरी च या।
अधर्मे धर्म बुद्धिश्च, मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात्॥

देव का अर्थ यहां पर है भगवान। अतः जिसमें देव के गुण न हो, जिसमें भगवानपने का स्वरुप ही न हो, उसे भगवान मानना उसमें देवबुद्धि धारण करनी। उसी तरह जो गुरुपद के लायक ही नहीं है, जिसमें गुरु के गुण भी न हो उसे गुरुबुद्धि से मानना तथा जो अधर्म पाप व्यापार है उसे धर्म मानना यह मिथ्यात्व है।

सम्यवत्व से विपरीत है। अतः मिथ्याप्व है। ठीक इस मिथ्यात्व है। ठीक इस मिथ्यात्व के विपरीत सम्यवत्व का स्वरुप बताते हुए हेमचन्द्राचार्य ने ही योगशास्त्र में कहा है कि-

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः।
धर्मे च धर्मधीः शुद्धा, सम्यक्त्वमिदमुच्यते॥

जो वास्तव में देव (भगवान) है, वीतरागी, सर्वज्ञ अरिहंत है, उनमें भगवानपने को बुद्धि रखना और गुरुपद पर जो 26 गुणों से युक्त है उनमें गुरुपद की बुद्धि धारण करना तथा सर्वज्ञो पदिष्ट मोक्ष मार्ग साधक धर्म को ही धर्म मानने की बुद्धि रखनी यह सम्यवत्व कहलाता है। मिथ्यात्व में जो स्वरुप जैसा है उससे विपरीत मानने की वृत्ति है अतः यह पाप है जबकि सम्यक्प्व में देव गुरु धर्मादि का जो जैसा वास्तविक यथार्थ स्वरुप है ठीक वैसा ही जानना मानना और आराधना यह सत्य स्वरुप है उसे वैसा ही उसी रुप में मानना सम्यक्त्व कहलाएगा। सम्यक्त्व का अर्थ ही यह है जो सत्य का पक्षपाती हो, स्वरुप और पद्धति दोनों में सत्यता का आचरण करने वाला, सत्यस्वरुप को जानने मानने वाला ही सम्यक्तवी कहलाएगा। आपका देव शब्द के स्वरुप विषय में भ्रम न हो अतः देव शब्द से किसे लेना यह स्पष्ट विषय में भ्रम न हो अतः देव शब्द से किसे लेना यह स्पष्ट कर देता हूंः-

जो देवाणि देवो, जं देवा पंजलि नमंसंति।
तं देव-देव महिअ सिरसा वंदे महावीरम्॥

सिद्धस्तवसूत्र के इस श्लोक में स्पष्ट कहा है कि- जो देवताओं के भी पूज्य देव है और जिन्हें देवता भी अंजलिबद्ध हाथ जोड़कर नमस्कार करते है और जो देवताओं के भी स्वामी इन्द्रादि से पूजित है ऐसे देवाधिदेव श्री महावीरस्वामी को मस्तक झुकाकर में वंदन करता हूं। नमस्कार करता हूं। अब कैसे देव को पूजना चाहिये यह कहते हैः-

सर्वज्ञा जितरागादि दोष स्त्रैलोक्य पूजितः।
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः॥
ध्यातव्योऽयमुपास्योऽयमयं शरणमिष्यताम्।
अस्यैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनाऽस्ति चेत्॥

जो सर्वज्ञ-केवलज्ञानी है, चराचर अनन्त ब्रह्माण्ड और लोक-अलोक के सर्व भाव को जाननेवाले है, राग-द्वेषादि दोषों (पापों) को जिन्होंने जित लिए है और जो जिन, जिनेश्वर-वीतराग बन चुके हैं, अब जिनके पास या साथ राग का प्रतीक शस्त्रास्त्रादि नहीं है इनका बाहयाभ्यंतर-द्रव्य-भाव उभय रुप से राग-द्वेष का सर्वथा संसर्ग ही नहीं है, ऐसे वीतरात जो त्रैलोक्यपूजित है, तीनों लोक में जो पूजनीय है तथा पदार्थ का जगत का जैसा स्वरुप है वैसा ही यथार्थ वास्तविक स्वरुप कहने वाले है, अनंतज्ञान से बतानेवाले है, मोक्ष का सही मार्ग बताने वाले है, कर्मो का क्षय किया है जिसने ऐसे सर्वज्ञ अरिहंत भगवान को ही परमेश्वर-परमात्मा मानना यही परमात्मा का शुद्ध-सही स्वरुप है। सम्यग् स्वरुप है और इससे विपरीत रागी-द्वेषी देव को मानना मिथ्या स्वरुप है और जैसा शुद्ध सम्यग् स्वरुप मानते है, जानते हैं तो आराधना उपासना भी उसी तरह कीजिए। श्रद्धा और साधना विपरीत नहीं होनी चाहिये। यदि आप में सद्-असद सच्चे-झूठे, अच्छे-बूरे, यथार्थ-अयथार्थ की परीक्षा करने की सही चेतना सम्यग् बुद्धि है तो इसी परमेश्वर का ही ध्यान करना, उपासना करना, इन्हीं की शरण स्वीकारना और इन्हीं के शासन (धर्म) का स्वीकार करना चाहिये। तो ही श्रद्धा भी सम्यग होगी और साधना भी सम्यग होगी ! इसी तरह गुरु और धर्म के स्वरुप में भी मानना-जानना को सच्ची सम्यग श्रद्धा एवं उपासना तथ्य आराधना का आचरण भी सम्यग ही करना यह उभय पक्षों सम्यक्त्व कहलाएगा अन्यथा तद विपरीत मानना और जानना तथा आराधना उभयरुप से मिथ्यात्व भाव कहलाएगा।

जैन और सनातन भारतीय संस्कृति में अक्षय तृतीया का महत्व क्यों है ?

जानिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारीः-

✻ अक्षय तृतीया को जैनों के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभ देवजी भगवान ने 13 महिने का कठिन निरंतर उपवास (बिना जल का तप) का पारणा (उपवास छोड़ना) इक्षु (गन्ने) के रस से किया था। आज भी बहुत जैन भाई व बहने वही वर्षी तप करने के पश्चात उपवास छोड़ते है और नये उपवास लेते हैं और भगवान को गन्ने के रस से अभिषेक किया जाता है।

✻ आज ही के दिन माँ गंगा का अवतरण धरती पर हुआ था।

✻ महर्षि परशुराम का जन्म आज ही के दिन हुआ था।

✻ माँ अन्नपूर्णा का जन्म भी आज ही के दिन हुआ था।

✻ द्रोपदी को चीरहरण से कृष्ण ने आज ही दिन बचाया था।

✻ कृष्ण और सुदामा का मिलन आज ही के दिन हुआ था।

✻ कुबेर को आज ही के दिन खजाना मिला था।

✻ सतयुग और त्रेता युग का प्रारम्भ आज ही के दिन हुआ था।

✻ ब्रह्माजी के पुत्र अक्षयकुमार का अवतरण भी आज ही दिन हुआ था।

✻ प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री बद्रीनारायणजी का कपाट आज ही के दिन खोला जाता है।

✻ बृंदावन के बाँके बिहारी मंदिर में साल में केवल आज ही के दिन श्री विग्रह चरण के दर्शन होते है। अन्यथा साल भर वो बस्त्र से ढंके रहते हैं।

✻ इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था।

✻ अक्षय तृतीया अपने आप में स्वयं सिद्ध मुर्हूत है। कोई भी शुभ कार्य का प्रारंभ किया जा सकता है। आप सभी जैनी और हिंदू धर्मावलंबियों को अक्षय तृतीया प्रसंग पर ढेर सारी शुभकामनाएं।

जैन धर्म में अक्षय तृतीया का महत्व तथा इसका व्रत, विधि एवं मंत्र भारतीय संस्कृति में पर्व, त्याहौरों एवं व्रतों का अपना एक अलग महत्व है। ये हमें हमारी सांस्कृतिक परंपरा से जहां जोड़ते है वहीं हमारे आत्मकल्याण में भी कार्यकारी होते हैं। वैशाख शुक्ला तृतीया को अक्षय तृतीया पर्व मनाया जाता है। इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) ने राजा श्रेयांस के यहां इक्षु रस का आहार लिया था, जिस दिन तीर्थकर श्रीऋषभदेव का आहार हुआ था, उस दिन वैशाख शुक्ला तृतीया थी। उस दिन राजा श्रेयांस के यहां भोजन, अक्षीण (कभी खत्म न होने वाला) हो गया था। अतः आज भी लोग इसे अक्षय तृतीया कहते हैं। जैनधर्म के अनुसार भरत क्षेत्र में इसी दिन से आहार दान की परम्परा शुरु हुई। ऐसी मान्यता है कि मुनि का आहार देने वाला इसी पर्याय से या तीसरी पर्याय से मोक्ष प्राप्त करता है। राजा श्रेयांस ने भगवान श्रीआदिनाथ को आहारदान देकर अक्षय प्राप्त किया था, अतः यह तिथि अक्षय तृतीया के रुप में मानी जाती है। यह दिन बहुत ही शुभ होता है, इस दिन बिना मुर्हूत निकाले शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं। जम्बुद्वीप के भरतक्षेत्र में विजयार्ध पर्वत से दक्षिण की ओर मध्य आर्यखण्ड में कुलकरों में अंतिम कुलकर नाभिराज हुए। उनके मरुदेवी नाम की पट्टरानी थी। रानी के गर्भ में जब जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव आये तब गर्भ कल्याणक उत्सव देवों ने बड़े ठाठ से मनाया और जन्म होने पर जन्म कल्याणक मनाया। फिर दीक्षा कल्याणक होने के बाद ऋषभदेव ने छः माह तक घोर तपस्या की। छः माह के बाद चर्या (आहार) विधि के लिए ऋषभदेव ने छः माह तक घोर तपस्या की। छः माह के बाद चर्या (आहार) विधि के लिए ऋषभदेव ने अनेक ग्राम नगर शहर में विहार किया, किन्तु जनता व राजा लोगों को आहार की विधि मालूम न होने के कारण भगवान को धन, कन्या, पैसा, सवारी आदि अनेक वस्तु भेंट की। भगवान ने यह सब अंतराय का कारण जानकर पुनः वन में पहुंच छः माह की तपश्चरण योग धारण कर लिया। अवधि पूर्ण होने के बाद पारणा करने के लिए चर्या मार्ग से ईर्यापथ शुद्धि करते हुए ग्राम, नगर में भ्रमण करते-करते कुरुजांगल नामक देश में पधारे। वहां हस्तिनापुर में कुरुवंश के शिरोमणि महाराज सोम राज्य करते थे। उनके श्रेयांस नाम का एक भाई था उसने सर्वार्थसिद्धि नामक स्थान से चयकर यहां जन्म लिया था। एक दिन रात्रि के समय सोते हुए उसे रात्रि के आखिरी भाग में कुछ स्वप्न आये। उन स्वप्नों में मंदिर, कल्पवृक्ष, सिंह, वृषभ, चंद्र, सूर्य, समुद्र, आग, मंगल द्रव्य यह अपने राजमहल के समक्ष स्थित है ऐसा उस स्वप्न में देखा तदनंतर प्रभात बेला में उठकर उक्त स्वप्न

अपने जेष्ठभ्राता से कहे, तब ज्येष्ठभ्राता सोमप्रभ ने अपने विद्वान पुरोहित को बुलाकर स्वप्नों का फल पूछा। पुरोहित ने जवाब दिया- हे राजन! आपके घर श्री ऋषभदेव भगवान पारणा के लिए पधारेंगे, इससे सबको आनंद हुआ। इधर भगवान ऋषभदेव आहार (भोजन) हेतु ईया समितिपूर्वक भ्रमण करते हुए उस नगर के राजमहल के सामने पधारे तब सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष की मानो अपने सामने आया है, ऐसा सबको भास हुआ। राजा श्रेयांस को भगवान श्रीऋषभ देव का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में श्रीमती वज्रसंघ की अवस्था में एक सरोवर के किनारे दो चारण मुनियों को आहार दिया था- उसका जाति स्मरण हो गया। अतः आहारदान की समस्त विधि जानकर श्रीऋषभदेव भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर पड़गाहन किया व भोजन गृह में ले गये। ''प्रथम दान विधि कर्ता'' ऐसा वह दाता श्रेयांस राजा और उनकी धर्मपत्नी सुमतीदेवी व ज्येष्ठ बंधु सोमप्रभ राजा अपनी लक्ष्मीपती आदि ने मिलकर श्री भगवान श्रीऋषभदेव को सुवर्ण कलशों द्वारा तीन खण्डी (बंगाली तोल) इक्षुरस (गन्ना का रस) तो अंजुल में होकर निकल गया और दो खण्डी रस पेट में गया। इस प्रकार भगवान ऋषभदेव की आहारचर्या निरन्तराय सम्पन्न हुई। इस कारण उसी वक्त स्वर्ग के देवों ने अत्यंत हर्षित होकर पंचाश्चर्य (रत्नवृष्टि, गंधोदक वृष्टि, देव दुदभि, बाजों का बजना व जय-जयकार शब्द होना) वृष्टि हुई और सभी ने मिलकर अत्यंन्त प्रसन्नता मनाई। आहारचर्या करके वापस जाते हुए श्रीऋषभदेव भगवान ने सब दाताओं को ''अक्षय दानवस्तु'' अर्थात् दान इसी प्रकार कायम रहे, इस आशय का आर्शीवाद दिया, यह आहार वैशाख सुदी-तीज को सम्पन्न हुआ था। जब श्रीऋषभदेव निरंतराय आहार करके वापस विहार कर गए उसी समय से अक्षय तीज नाम का पुण्य दिवस (जैनधर्म के अनुसार) का शुभारंभ हुआ। इसको आखा तीज भी कहते हैं। यह दिन हिन्दू धर्म में भी बहुत पवित्र माना जाता है। इस दिन अनबूझा मुर्हूत मानकर शादी, विवाह एवं मंगलकार्य प्रचुर मात्रा में होते हैं। जैन धर्म में दान करें:-

* दान देनेवाले और दान लेनेवाले, दोनों ही महान होते हैं।
* दान मान बढ़ाने के लिए नहीं, मान घटाने के लिये दिया जाता है।
* उदय में न हो तो तीर्थकरों को भी आहार मिलता है।
* पूर्व में दिया गया दान का संस्कार ही, सही समय पर याद आता है।
* कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती। आखिर मुनिराज को आहार मिल ही गया।
* साथ में किया गया कार्य ही,एक दूसरे के काम आया।
* तीर्थकरों को आहार देने वाले, नियम से भगवान बनते हैं।
* यदि मुनिराज आदिनाथ न निकलते तो आहार दान की विधि से कोई परिचित ही नहीं हो पाता।
* चार दान देनेवाले जीव, महान होते हैं।
* महान जीवों के आहार की अनुमोदना भी महान होती है।

सुधरें-सुधारेंगे

✻ रामेश्वरप्रसाद गुप्ता ''इंदु'', बड़ागांव

चित्त में विशुद्ध भक्ति, ज्ञान को जगायें दीप,
अन्तरस करें प्रकाश, सवरें-सवारेंगे।
काम-क्रोध, लोभ, मोह, पाप-ताप करें दूर,
तन, मन, मानस को, निखरें -निखारेंगे॥
जीवन में एक बात, का रखें विशेष ध्यान,
माता-पिता, गुरु को न बिसरें-बिसारेंगे।
प्रतिकूलता में कभी, घबरायें नहीं ''इंदु''
सु चिन्तन सचरित, सुधरें-सुधारेंगे॥

स्थित-प्रज्ञ

मैं अजर हूं, अमर हूं। अनन्त हूं। मैं ईश्वर हूं, खुदा हूं, गॉड हूं। न मेरा जन्म है और न मरण है! मैं महाकाल की भुजाओं से बाहर हूं। मेरा प्रकाश देश और काल की सीमाओं को समाप्त करने वाला है। मैं महाप्रकाश हूं-असीम हूं और अनन्त हूं! मैं सन्त हूं, सच्चा सन्त। मैं दुःख-सुख के खिलौनों से खेलते समय एक जैसा अट्टाहास करता हूं। न मुझे सम्मान झुका सकता है और न अपमान, न सुख और न दुःख, न हानि और न लाभ, न जीवन और न मरण। मैंने जीवन और मृत्यु में समान सौंदर्य देखने का जादू सीख लिया है। मैं स्थित-प्रज्ञ हूं, अतः प्रत्येक स्थिति में एक-सा रहता हूं।

ऋद्धि से विगलित दशपुर नरेश संयमी बने

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

ऋद्धि तीन प्रकार की होती है:- 1- देव ऋद्धि, 2- राज ऋद्धि, 3- गणि ऋद्धि।

1- देव ऋद्धि:- तीन प्रकार की होती है। विमान विकुर्वणा और परिचारणा। 1- विमान ऋद्धि- देवों के 8497023 विमानवास, व्यंतर देवों के असंख्यात नगरावास, ज्योतिषी देवों के असंख्य विमान, भवनपति, देवों के 4 करोड़ 6 लाख भवनावास होते है। अधिक संख्या में विमान विमान ऋद्धि है।

2- विकुर्वणा:- शकेन्द्र के आदेश से अभियोकि देव ने आकाश में अतिप्रिय और आश्चर्यचकित करने वाली श्रेष्ठ मानी जानेवाली विकुर्वणा (वैक्रिय) ऋद्धि की रचना की। ऐसी ऋद्धि देखकर दशार्णपुर (वर्तमान-मंदसौर मध्यप्रदेश) के राजा दशार्णभद्र का मन विगलित हो गया। माली द्वारा दशार्णपुर नगर में भगवान श्रीमहावीर स्वामी के आने की बात सुनकर राजा दशार्णभद्र प्रसन्नता प्रकट करता हुआ, माली को परितोषिक देकर, राजसी ठाठ बाठ से भगवान के दर्शनार्थ जाने की पुरी नगरी में घोषणा करवा दी। राजा चतुरंगीणी सेना के साथ पुरी नगरी के जनों के साथ भगवान के दर्शनार्थ रवाना हो गया। उधर इन्द्र भी भगवान के दर्शनार्थ आ रहा था। इन्द्र ने अनुभव किया कि राजा दशाणभद्र के दर्शन-वंदन के भाव तो अच्छे हैं, लेकिन अहंकार का भाव ठीक नहीं है। इन्द्र अहंकार के भावों को मिटाने के उद्देश्य से दैनिक ऋद्धि के साथ राजा के लाव लश्कर के आगे-आगे चलने लगा। इन्द्र के वैभव को देखकर इन्द्र का मुकाबला न कर पाने का विचार उसके मन में शुभ उत्पन्न हो गया। भौतिक वैभव में यदि मैं इन्द्र को परास्त न कर पाया तो मैं अपने स्वाभिमान की रक्षा कैसे कर पाऊंगा? इसका एक ही उपाय उसे सुझा और वह था-संवेग भाव, संयम जीवन और अपने विचारों को मूर्त देकर राजा वैभव को तिलांजलित कर, त्याग कर प्रभु श्रीमहावीर के चरणों में बैठकर संयम ग्रहण कर लिया। ऐसा देखकर इन्द्र दशार्णमुनि के चरणों में नतमस्तक होकर बोला- धन्य है, आपको भौतिक दृष्टि से ऋद्धि वैभव में हराने की ताकत तो मुझमें है, पर आपने संयम जीवन स्वीकार कर मेरी ताकत को परास्त कर दिया है। आपको धन्य-धन्य है।

विकुर्णता ऋद्धि:- वैक्रिय करने की ऋद्धि समस्त देवों में समान नहीं होती। अतिप्रिय और आश्चर्यचकित करने वाली वेक्रिय ऋद्धि श्रेष्ठ मानी जाती है। शकेन्द्र के आदेश से आभियोगिक देव ने आकाश में 64 हजार हाथियों की विकुर्वणा करते प्रत्येक हाथी के 500 मुख, प्रत्येक मुख पर 8 दांत, प्रत्येक दांत पर 8 पुष्ककरिणी बावड़िया, प्रत्येक बावड़ी में एक लाख कमल, प्रत्येक कमल के एक लाख पखुड़ियों की रचना की। ऐसी ऋद्धि देखकर दशपुर नरेश दशार्णभद्र का मन विगलित हो गया और उन्होंने राज्य वैभव त्यागकर प्रभु महावीर के चरणों में संयम प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर किया।

परिचारणा ऋद्धि :- काम कीड़ा करने की ऋद्धि। चमरेन्द्रजी के 5 अग्रमहिषियां प्रत्येक के 8 हजार देवियां, प्रत्येक 8 हजार वेक्रिय शरीर बनानेवाली। उनसे भी अधिक चमरेन्द्र जितनी देवियां हो उतने वेक्रिय शरीर बनाकर उनके साथ परिचारणा कर सकते थे।

2- राज ऋद्धि:- चक्रवर्ती राजा के दिग्विजयी होने पर समारोह का आयोजन अतिमान ऋद्धि, राजा के नगर बाहर जाने पर साज सजावट और जयकोर निर्माण ऋद्धि और सेना, बल, कोष्टागार, ऋद्धि होता है।

3- गणि ऋद्धि:- गणि का ज्ञान, दर्शन और चारित्र की ऋद्धि होती है। श्रुतज्ञान परिणामी ज्ञान ऋद्धि, प्रवचन, शास्त्रज्ञनता दर्शन ऋद्धि और दीर्घ तपस्वी, त्यागी गणि की चारित्र ऋद्धि होती है।

एकरस:- *मनुष्य के सामने हानि, निन्दा, प्राकृतिक प्रकोप द्वारा तोड़-फोड़, संबंधियों की मृत्यु इत्यादि के रुप में जो क्लेश कारक परिस्थितियाँ आती है- उनमें यदि मनुष्य कष्ट अनुभव करता है अथवा यदि किन्हीं इहलौकिक इच्छाओं की आपूर्ति के कारण उसे मानसिक क्षोभ होता है तो उसके अपने मन पर नियंत्रण न होने के कारण ही ऐसा होता है। ईश्वरीय ज्ञान हमें ऐसी परिस्थितियों में ही एकरस रहने का मार्ग दर्शाता है। यदि इन परिस्थितियों से ही हमारी अवस्था डोल जाती है और हम चिंतित, दुःखी, अशान्त अथवा क्षुब्ध महसूस करते है तो गोया यह हमारे ज्ञान की कमी के सूचक है। अतः इन परिस्थितियों में ज्ञान के बलप्रद रहस्यों को धारण करना चाहिये और इसके लिये अधिक ज्ञानवानों का संग करना चाहिये। तभी हम सर्व परिस्थितियों में एकरस रह पायेंगे।*

सेवा करने का लाभ अवश्य लें

मुंबई, जुहु के निवासी जगुभाई की दृढ़भक्ति की बात जानकर आप भी भावविभोर हो जायेंगे। उनकी भक्ति को देखकर सब उन्हें ''दादीजी'' कहकर संबोधित करते हैं। आज से तेरह वर्ष पूर्व श्री शत्रुंजय की नवाणुं यात्रा करते हुए उन्होंने घेटी की पाग के पास अपना रसोई घर बनाया। यहां एकासणा कर के वे शांतिपूर्वक अत्यन्त भक्तिभाव सहित नवाणु यात्रा करते। ऐसे में भावना जाग्रत हुई- साधु-साध्वी भगवंत भी नवाणु यात्रा करते हैं, उनका लाभ प्राप्त हो तो अहोभाग्य...! साधु-साध्वी भगवंतों से विनंती करना आरंभ किया। कभी-कभी लाभ मिल भी जाता। वे प्रसन्न हो गये। फिर नवांणु की यात्रा करनेवाले श्रावकों का लाभ लेने की भावना जाग्रत हुई। घेटी की पाग के बाहर भोजन इत्यादि की कोई सुविधा नहीं है। इस कारण से नवांणु करने वाले पालीताना की तलहटी की ओर उतरने के बाद ही एकासणा कर सकते थे। जगुभाई ने तपस्वी यात्रियों से विनंती करना आरंभ किया.... और लाभ मिलने लगा।

बारह वर्ष से जगुभाई फागुन शुक्ला त्रयोदशी तक घेटी की पाग के पास ही रहते हैं और प्रतिदिन तपस्वी, वर्षीतप करने वाले आदि श्रावकों और श्राविकाओं का भी सुन्दर लाभ लेते हैं !! धर्मपत्नी भी 75 वर्ष की है। आर्थिक दृष्टि से खूब सम्पन्न होते हुए भी, इस वय में भी वे सबके लिये स्वयं खाना तैयार करती हैं और वह भी अत्यंत उल्लास पूर्वक...! कुछ समय के बाद तो जगुदादा ने अपना घर ही वहां बना लिया ताकि तपस्वियों की सभी सुविधाओं का ध्यान रखा जा सके। साधु-साध्वियों के लिए निर्दोष आहार की व्यवस्था के साथ साथ वे सब वहीं आहार ग्रहण भी कर सकें ऐसी व्यवस्था भी जगुदादा ने कर दी।

आयंबिल करनेवालों के लिए आयंबिल की रसोई भी यहां बनाई जाती है। दादीजी की ऐसी भावना और धर्मप्रेमी देखकर आसपास के जैनेतर लोग भी अपने फलों के बगीचे से अत्यन्त आग्रहपूर्वक चीकू इत्यादि फल जगुदादा को देने आते हैं।

हे जैन धर्मानुयायी सज्जनों ! आप लोग भी यात्रियों, तपस्वियों, नवाणु यात्रा करनेवालों की सेवा करने का लाभ जहां भी ले सकें, अवश्य लें और जब भी पालीताना जाने का अवसर प्राप्त हो तब जगुदादा की भक्ति साक्षात देख कर भावपूर्वक उनकी अनुमोदना भी अवश्य करें।

भावना-ज्ञान

''मा रुष.... मा तुष'' इतने ही पद से (वह भी अशुद्ध) माषतुष मुनि ने केवलज्ञान पाया।

गुरुदेव ने दिये हुए एक ही श्लोक से मलया ने दुःखभरी जिंदगी में भी समता का दीया बूझने नहीं दिया।

खरीदी से मिले हुए एक ही श्लोक से चारुदत्त अनेक विघ्नों के सामने झूझा और पार उतरा।छोटी इरियावहियं बोलते-बोलते अइमुत्ता मुनि केवली बने।

कीमत कितना पढ़े- इसकी नहीं है, किन्तु कितना जीवन मैं उतरा-इसकी है। कितना विस्तार बढ़ा, इसकी कीमत नहीं है, किन्तु कितनी गहराई बढ़ी-उसकी कीमत है। भले ही थोड़ा पढ़े, किन्तु उसे खूब ही भावित बनाओ, बहुत गहराई से जाने दो। अगर ऐसा भावित ज्ञान होगा तो एक ही श्लोक.... अरे एक पद भी काफी है भावित बना हुआ ज्ञान हमें ज्यादा से ज्यादा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाता रहता है।

पीतल के घड़े ने मिट्टी के घड़े से पूछा- ''मैं ज्यादा मूल्यवान होने पर भी मुझ में पानी ठंडा नहीं होता और तुझ में क्यों ठंडा होता है ?''

''भैया ! बात ऐसी है कि मैं पानी को मेरे अंदर जाने देता हूं। तू ऊपर ही रहने देता है।'' मिट्टी के घड़े ने कहा।

ज्ञान भावित हुआ तब कहा जाता है जब भीतर उतरे, मिट्टी के घड़े के पानी की तरह गहराई में जाय। हमारा ज्ञान कैसा है ? पीतल के घड़े के पानी जैसा या मिट्टी के घड़े के पानी जैसा ? गहराई में उतरता जाता है, त्यों-त्यों ज्ञान का महत्व बढ़ता जाता है। इसलिए ही श्रुतज्ञान से चिंता ज्ञान की और चिंता ज्ञान से भावना ज्ञान की कीमत ज्यादा है। श्रुतज्ञान पानी जैसा है तो चिंता ज्ञान दूध जैसा है किन्तु भावना-ज्ञान तो अमृत जैसा है। अमृत की बूंद मिल जाय तो भी काम बन जाय ! थोड़ा भी भावना-ज्ञान मिल जाय तो काम बन जाय !

श्रुतज्ञान से चिंता ज्ञान ज्यादा मूल्यवान है, क्योंकि वह ज्यादा गहराई में जाता है, लेकिन भावना ज्ञान तो सब से मूल्यवान है, क्योंकि वह तो एकदम गहराई में जाता है, रोम-रोम में फैल जाता है, प्रदेश-प्रदेश में व्याप्त हो जाता है। इसलिये ही इसको अमृत की उपमा दी गई है।

श्रुतज्ञान शब्द तक पहुंचता है। शब्द पानी है।

चिंताज्ञान अर्थ तक पहुंचता है। अर्थ दूध है।

भावनाज्ञान रहस्य तक पहुंचता है। रहस्य अमृत है।

दिनांक 20/01/2023 - जन्म दिन पर विशेष

जैनाचार्य श्रीमृदुरत्नसागरसूरीजी वागड़ के विभूषण है

✻ अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर

एशिया अपनी एकता और शक्ति के लिए विख्यात है। अमेरिका को अपने धनी होने का गौरव है। फ्रांस अपने सुन्दर शहर पेरिस के लिए प्रसिद्ध है और जापान अपनी देश भक्ति के लिए, जर्मनी अपनी वैज्ञानिक ताकत के लिए प्रसिद्ध है। वहीं भारतीयों को अपने संतों पर गौरव है। भारतीय संत चिंतनशील, मनन शील एवं आत्मदृष्टा होते हैं। जन कल्याण की भावना, प्रेरणा, उपदेश मानव को अध्यात्म प्रदर्शन करते हैं।

भारतवर्ष संतों की भूमि है। धर्म इस देश के कण-कण में अन्तर्निहित है। संत समाज और राष्ट्र की निधि है और हमारे देश की आत्मा की उज्जवल ज्योति है जिसके प्रकाश से हमारा देश आज तक अध्यात्म में शिरोमणि बनकर प्रखर और मुखर रहा है। संत और सूर्य कभी एक जगह नहीं रहते हैं, ये जहां सोते हैं, वहां अज्ञान मिटाते हैं, ज्ञान का प्रकाश फैलता है। संत जब ठहरते है, शरीर में अन्तरात्मा उनकी चालू रहती है। संतों की शरण में आते ही जीवन सेमल रुई की तरह ही हलका हो जाता है। संतों की उपस्थिति सदैव मंगलकारी होती है और उनका आभा मण्डल मंगलकारी होता है। संत स्वयं प्रेरक होते हैं। जहां रहते है वहां पर ज्ञान की अलख जगाते हैं किन्तु वह एक जगह नहीं रहते है, पद-विहार उनकी साधना है।

संतों का जीवन स्व-पर कल्याणक होता है। संत प्रभावना हेतु संयममय व्यतीत करते हैं। संत का हृदय नवनीत सा कोमल है। प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी मधुर मुस्कान बिखरते रहते हैं। संत पुरुष अनेकानेक गुणों से ओतप्रोत ऐतिहासिक महान विभूतियों का मूल्यांकन करना आसमान के सितारों का भूतल पर लाकर धरने तथा सूर्य के सम्मुख दीपक दिखाने और सागर के सामने बूंद बताने का घमण्ड करना बचकानी बात है। सत्संग आत्म कल्याण का महत्वपूर्ण आयाम है एवं संत शुभ भावों एवं विचारों का प्रतीक है। उनके पास बैठने मात्र से ही श्रावक-श्राविकाओं को अच्छी प्रेरणा एवं शांति मिलती है।

ऐसे ही सद्‌गुणों से युक्त संत एवं उद्‌भूत चिंतक जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. ने मालव भूषण, तप सम्राट, महामांगलिक प्रदाता, जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. से दीक्षा गांव सियोर जिला महसाना (गुजरात) में जेठ सुदी-आठम संवत् 2040 दिनांक 7-6-1984 को प्राप्त की थी। दीक्षा लेने के पश्चात् ''सन्यास की तलेटी से आचार्य के शिखर तक 40 चार्तुमास संवत् 2079 तक किये। उन्होंने अब तक 4 शिष्य बनाये है। शंखेश्वर महातीर्थ में वैसाख सुद दूज, दिनांक 23-4-2008 के गणिपद, बड़ौदा तीर्थ जिला डूंगरपुर (वागड़ प्रदेश) में वागड़ विभूषण की पदवी से दिनांक 30-11-2011 को विभूषित हुए। शासन प्रभावना में 41 छः री पालित संघ निकाले है तथा 41 वां छःरी पालित संघ, सोनगढ से पालीताना का 30 जनवरी 2022 को सम्पन्न होगा। आप श्री संघ निकालने वाले महाराज के नाम से विख्यात है। इनका पेटेन्ट नारा ''झण्डा जैन धर्म का'' नाद गुंजायमान करने वाले ये संत वागड़ प्रदेश में प्रसिद्ध है।

परम पूज्य जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. की पंन्यास पदवी मालवा-मेवाड़की हृदयस्थली विश्वविख्यात श्री नागेश्वर महातीर्थ बैसाख सुद-12 दिनांक 11-5-2014 रविवार को पंचान्हिका महोत्सव, हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में मालव भूषण, तप सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा द्वारा प्रदान की गई। वे पंच महाव्रतधारी के गुणों का पालन करते हुए, अपनी क्रिया में कठोर होकर क्रियोद्धारक है। आप प्रवचन गुजराती, हिन्दी व वागड़ी भाषा में करते है। आगम पालीताना (सौराष्ट्र) संवत् 2068 में चार्तुमास के दौरान प्रवचन व प्रतिक्रमण करते समय कई एक थुईयां बड़े राग व लय में सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था, सुनने में बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ, उन्हें सैकड़ों थुईयां कण्ठस्थ याद हैं।

आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. ने यथा नाम तथा गुण होने का चरितार्थ किया है, वे क्रियोद्धारक व मर्यादित होने के कारण क्रोध नहीं होने, मदमंद मुस्कराते हुए

श्रावकों को जवाब देते हैं तथा प्रत्येक श्राविकाओं द्वारा वंदन करने पर उन्हें धर्मलाभ व शुभाशीर्वाद देते हैं। स्वगुणों में सद्भावना दर्शाते हुए श्रावक-श्राविकाओं (दशा विशा पोरवाल वागड़प्रदेश) के हृदय में अमिट छाप-प्रभाव बनाते हुए अच्छी छवि बनाई है। उनके साथ सत्संग करने, धर्म प्रभावक, भक्ति, संघ, प्रतिष्ठा, दीक्षा आदि करवाकर जिन शासन की विशेष प्रभावना करा रहे हैं। उनके द्वारा तप, धर्म, जिनशासन प्रभावना, संघ प्रभावना, पूजन कराना आदि जो भी चाल गया जो हर जगह स्थानीय संघों ने पूर्ण कराया है कभी कहीं पर भी मना नहीं किया गया। श्रावक-श्राविकाओं ने उनकी बात तुरन्त मानी गयी है तथा हर कार्य समारोह को संघ द्वारा रुचि के साथ प्रसन्नता व उत्साह के साथ संपूर्ण किया है। उनकी वाणी सरल, मृदभाषी होने के कारण उनके साथ सत्संग, भक्ति व प्रवचन के माध्यम से संघ को सुख व शांति मिलती रही है एवं अनुभूति हुई है। संत के सभी गुण आचार्यश्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. में दृष्टि गोचर होते रहे है, आप वन्दनीय है। अभिनन्दनीय है।

उक्त सभी बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए आचार्यश्री श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी महाराज साहब वागड़ प्रदेश विभूषण है सागर गच्छ के गौरव है।

24 तीर्थंकरजी के 1452 गणधर परिचय

वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ परमात्मा से लेकर अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी तक सभी 24 तीर्थंकरों के कुल गणधरों की संख्या 1452 है।

जैसे तीर्थंकर नाम कर्म होता है, वैसे ही गणधर नाम कर्म भी होता है। तीर्थंकर पद को छोड़ के बाकी के सभी पदों में गणधर पद श्रेष्ठ है। आचार्य श्री मलयगिरीजी महाराज साहेब ने पंचसंग्रह ग्रंथ में लिखा है- ''सवि जीव करु शासन रसी ऐसी भावना का चिंतन और प्रयत्न करता है, वह तीर्थ का नाम कर्म कर उपर्जन करता है। जो जीव स्वजन कर्मी का उद्धार करने की भावना और प्रयत्न करता है, वह जीव गणधर पद प्राप्त करता है, महापुण्यशाली जीव ही ऐसी स्थिति को पा सकते है। उनकी रुप सम्पदा अन्य जीवों से भिन्न होती है। आहार शरीर का रुप सौंदर्य से अधिक रुप गणधर देव का होता है।

1- आदिनाथ भगवान के 84 गणधर।
2- अजितनाथ भगवान के 95 गणधर।
3- संभवनाथ भगवान के 102 गणधर।
4- अभिनंदन स्वामी भगवान के 116 गणधर।
5- सुमतिनाथ भगवान के 100 गणधर
6- पद्मप्रभ स्वामी भगवान के 107 गणधर।
7- सुपार्श्वनाथ भगवान के 95 गणधर।
8- चंद्रप्रभ स्वामी भगवान के 93 गणधर।
9- सुविधिनाथ भगवान के 88 गणधर।
10-शीतलनाथ भगवान के 81 गणधर।
11-श्रेयांसनाथ भगवान के 76 गणधर।
12-वासुपूज्य स्वामी के 66 गणधर।
13-विमलनाथ भगवान के 57 गणधर।
14-अनंतनाथ भगवान के 50 गणधर।
15-धर्मनाथ भगवान के 43 गणधर।
16-शांतिनाथ भगवान के 36 गणधर।
17-कुंथुनाथ भगवान के 35 गणधर।
18-अरनाथ भगवान के 33 गणधर।
19-मल्लिनाथ भगवान के 28 गणधर।
20-मुनिसुव्रत स्वामी भगवान के 18 गणधर।
21- नमिनाथ भगवान के 17 गणधर।
22- नेमिनाथ भगवान के 11 गणधर।
23-पार्श्वनाथ भगवान के 10 गणधर।
24- महावीर स्वामी भगवान के 11 गणधर।

कुल 1452

विचार मंथनः- *मंदिर भक्त और भगवान का मिलन स्थल है। प्रभु बड़ा दयालु है। तुम चार कदम चलते हो तो यह हजार कदम चलता है। पता है, तुम मंदिर क्यों जाते हो ? मंदिर में भक्ति और परमात्मा का मिलन होता है। प्रभु कहते हैं- तुम घर से निकल कर मंदिर तक आओ तो मैं सिद्धालय से उतर कर मंदिर तक आ जाऊंगा और तुम्हारा मिलन हो जायेगा। तुम्हारा घर मंदिर से कितनी ही दूर क्यों न हो वह सिद्धाचल के सामने चार कदम से ज्यादा नहीं है।*

दिनांक 14/11/2022 - 62 वें जन्म दिन पर विशेष

सागर समुदाय के हर्ष सागरजी....

* डॉ. सुभाष जैन

मानव जीवन पानी की एक बूंद, उपवन के एक फुल जंगल में उगी एक घांस के तिनके के तुल्य है। जीवन का महत्व इतना नहीं है जितना जीवन का अस्तित्व बनाये रखने का है। जीवन का सबसे स्पष्ट तथ्य इसकी क्षणभंगुरता है अनियता है हमारे विचार, हमारे कार्य और हमारी सभी गौरवपूर्ण उपलब्धियां एक दिन इतिहास का अंग बन जाने वाली है यह सब हम भलीभांति जानते है परन्तु इसके बाद भी कुछ जीवन अपने यशस्वी कृत्यों से अपने जीवन समर्पण से एवं अपनी स्वपर कल्याण की भावना से हजारों हजार लोगों के लिये परम वंदनीय स्थान पा लेते हैं। यह सब होता है कैसे ? इसको हम एक खोज का विषय मान सकते हैं। उनके जीवन के कौन से मूल्य है ? जो उन्हें धर्म, जाति और समाज में उच्चता के मेरु शिखर पर विराजमान करते हैं ? प्रश्न उतना कठिन नहीं है कि इसका उत्तर नहीं दिया जा सके पर उत्तर के साथ हमें कुछ अन्य बिन्दुओं पर भी विचार करना होगा। मेरे विचार से स्वर्ग नरक कोई भौगोलिक क्षेत्र नहीं है। जो आत्मा अपने दुष्कर्मो के लिये अनुपात से दग्ध है, वहीं नरक में है जो आत्मा अच्छे ढंग से बिताने के लिये संतुष्ट है वहीं स्वर्ग में है, किसी मनुष्य की साधुता का परिक्षण इस बात से होता है कि वह किस सीमा तक अपनी प्रकृति की दुर्बलता पर प्रभुत्व पाने में सामर्थ हुआ है। धर्म जीवन से बाहर ले जाने का मार्ग नहीं है। इसी के द्वारा आत्मा और जीवन के क्षेत्र, एक से दूसरे में प्रवेश कर मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं।

यह भूमिका मैंने इसलिये बांधी है कि मैं आपको बतला सकूं कि कुछ पुण्यात्माओं का इस संसार में आगमन विशिष्ट कारणों से होता है वे ईश्वरीय दूत के रुप में जन्म लेती है। ऐसी पुण्यात्मा के जन्म के समय की घटना का भी अगर हम गंभीरता से मनन करेंगे तो यह आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि जन्म लेनेवाली आत्मा ने आने के साथ जन्म भूमि और जन्मात्री माता को भी धन्य किया है।

कपड़वंज जैसे पवित्र पावन उपकारी जन्मभूमि जिसकी बनी वह मीनेशकुमार एक दिन जैन जगत के श्रमण समुदाय में सर्वोच्च पद से अलंकृत होगा यह उनके दीक्षा लेते ही समझ में आने वाली बात थी क्योंकि यह भूमि का ही पुण्य प्रताप है जिस भूमि पर पूज्य सागरजी ने जन्म लिया वहां तो हर्ष का सागर लहरायेगा ही। मेरा उनका प्रथम परिचय श्री नागेश्वर महातीर्थ में हुआ था उसके बाद उज्जैन चार्तुमास में तो अनेक विशिष्ट उपलब्धियां उनके नाम के साथ दर्ज हो गई। यही नहीं वे मालवा के जिस क्षेत्र में गये वहां के धर्मिष्ठों ने उन्हें मालवा में साधु-साध्वी भगवंतों का आदर सम्मान कैसे होता है ? इसका आभास करा दिया, रतलाम, घसोई, वही पार्श्वनाथ, श्री नागेश्वर तीर्थ में आपके पर्दापण में अनेक नये धर्म इतिहास रचे गये। संत और मानव का जो अंतर है वह उस पद पर आरुढ़ होने पर ज्ञात होता है संतगण ऐसी अभिरंजित दर्पण की आकृतियां नहीं है जो अपनी पवित्राता में सुंदर आसमानी हो उनमें कुछ ऐसी चीज है जिसे हम जगत में सर्वत्र प्रसारित करना चाहेंगे उनमें अवश्य कुछ ऐसी चीज है जिसे हम जगत में सर्वत्र प्रसारित करना चाहेंगे, उनमें अवश्य कुछ ऐसा होता है,परन्तु वह क्या है ? हम इसका अंदाज नहीं लगा सकते है उस पर पहुंचने के लिये हमें कैसा बनना होगा जो उनमें है वह उनके रक्त और अस्थि में है, एक ऐसा रहस्य जिसे जीया तो जा सकता है परन्तु शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता है।

36 गुणों से युक्त पदवी पा लेना तो आसान है पर पदवी के पूर्व ही उन गुणों को अंतर में स्थापित कर लेना और भी कठिन है क्योंकि आचार्य पद पर पहुंचने वाली पुण्यात्मा को अपने दायित्व और कर्त्तव्य का बोध होता है, उनके सामने शासन के बड़े गंभीर और चुनौतिपूर्ण कार्य आते है, सबको साथ लेकर उन्हें पूर्णता पर पहुंचने का कार्य नहीं कर सकता है जिसे देव और गुरु की कृपा प्राप्त हो मैं यह कह सकता हूं कि यह सामर्थ और शक्ति पू.आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. में है, मैं यह भी कह सकता हूं कि- उनका पुण्य उदय भी जबर्दस्त है कि जिनशासन का जो भी काम वे अपने हाथ में लेते है वह सचोट रुप में पूर्ण होते हैं। गच्छाधिपति महोत्सव सफलता का नवीनतम उदाहरण है। धर्म का आधार लेकर मनुष्य अपने अभीष्ट पद को प्राप्त करता है एवं पाप या अपूर्णता को दूर कर अपने चरित्र को उज्जवल बनता है, धीर पुरुष ही संसार में अपने सद्कर्मो से उन्नति के शिखर पर विराजमान होते हैं, ऐसे ही धीर गंभीर एवं अनुशासन प्रिय पू. आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी ने सागर समुदाय को अपनी शासन प्रभावना से उच्चता के शिखर पर पहुंचाने के साथ गुरुभक्तों का एक विशिष्ट वर्ग खाड़ा किया है, अपनी सहजता सरलता और आत्मीय मुस्कान के द्वारा भक्तों का मन जीतने वाले, अंतरमन की शून्यता को भरनेवाले मालव शिरोमणी संत आज श्रमण समुदाय में एक विशिष्ट स्थान पर पहुंच गये है। मैं उनके प्रति अपने कृतज्ञ भाव अर्पित करता हूं और अधिष्ठायक देव से प्रार्थना करता हूं कि आपश्री जिनशासन की प्रभावना में एक चमकता सितारा बनकर चमकते रहे। धन्यवाद।

पद पाने के बाद मुझे अपनी मर्यादा और कर्त्तव्य का ध्यान है : आचार्य श्री हर्षसागरसूरीश्वरजी म.सा.

✻ डॉ. सुभाष जैन

डॉ. जैन– यहां तक पहुंच कर कैसा लग रहा है आपको ?

हर्ष– जिनशासन कितना महान है व्यक्ति में रही हुई विशेष शक्ति को देखते ही महापुरुषों उदार बनके अपने स्थान पर शिष्यवृंद को बिठाकर शासन की विशालता का अनुभव करवाते है। यहां परंपरा तो मात्र जिनशासन में ही है– मैं अपने आपको धन्य समझता हूं कि मुझे एक महान शासन मिला।

डॉ. जैन– इतना बड़ा आयोजन ? इस सबको आपने कैसे मैनेज किया ?

हर्ष– मैंने कहां कुछ किया ? अगर सही कहूं तो साधु–साध्वीजी ही ने बहुत कुछ किया है। अब आपको क्या बताऊं ? एक उपवास से लेकर 36–36 तेले तक किये है, साध्वी म.सा. ने चने की आयंबिल किये है। आचार्य पद पूर्व ही मुझे तप और जप मिला है। मैंने क्या किया है ? सभी का अपूर्व सहकार उनकी भावना ही सब सफलता दिला रही है।

तप कर कुंदन बनने की प्रक्रिया के द्वारा वे जिस मुकाम पर पहुंचे है, उसका साक्षात्कार मैं पहला करना चाहता था। 2 मार्च को पूना के आदिनाथ सोसायटी में भगवती प्रवज्या प्रसंग था उसी दिन मैं वहां पहुंचा। मैंने उनके पुण्यबल को उज्जैन में हुए (सन् 2000) का चार्तुमास के अधिकांश क्षणों अनुभव किया है, उनका वही प्रभाव आज भी विद्‌मान है। श्रमण समुदाय के सर्वोच्च पद पर आरुढ़ होने की भव्यतम तैयारियां से वे लगभग मुक्त थे। हां, सलाह मशुहरा के लिये लोग आते हैं, चर्चा करते हैं पर इस सबके बीच शासन प्रभावना का कार्य प्रभावित न हो उसका पक्का ख्याल पू. पंन्यासजी (अब आचार्यश्री) को बराबर था। व्यस्तताओं के मध्य मैंने उनके समय में से अपने लिये खींचतान कर चर्चा के लिये कुछ समय निकाला। पंन्यास पद के रुप में अंतिम और आचार्य पद के रुप में उनसे हुए प्रथम साक्षात्कार के अंश आपके लिये प्रस्तुत है।

डॉ. जैन– भव्य कार्यक्रम को साकार करने में आई अड़चने ?

हर्ष– नहीं–नहीं ! कुछ भी तो परेशानी नहीं हुई।

डॉ. जैन– इसे क्या आप अपने जीवन का उत्कर्ष मानते है ?

हर्ष– भावना की जवाबदारी का एहसास बढ़ गया है, व्यक्तिगत रुप से अगर मेरी बात कहूं तो इससे बहुत जवाबदारी बढ़ जायेगी। शासन में लोगों का विश्वास एक व्यक्ति पर कितना हो जाता है यह पद पर पहुंचने पर ही ज्ञात होता है।

डॉ. जैन– समुदाय में आपके वरिष्ठ गुरु भगवंतों का आशीर्वाद...?

हर्ष– देव गुरु की कृपा से मैं आज यहां पहुंचा हूं, हर्षसागर की क्या ताकत की वह कुछ कर सके यह सब तो मेरे गुरु भगवंतों की कृपा का ही आर्शीवाद मुझे मिल रहा है। समुदाय के सभी गुरु भगवंतों के मंगल आर्शीवाद और उनका वासक्षेप मुझे प्राप्त हुआ है। गच्छाधिपति से लेकर सभी गुरु भगवंतों का आर्शीवाद ही मेरी ताकत है।

डॉ. जैन–समुदाय में 36 वें आचार्य बनने के क्या मायने है ?

हर्ष– यह मेरे भाग्य में लिखा था, 36 वां आचार्य समुदाय में बनना और आचार्य पद के 36 गुणों का पालन करना मेरे लिये एक बड़ा दायित्व बन गया है।

डॉ. जैन– आपको आयंबिल आराधना चली रही है ?

हर्ष– हां, 36 वां आयंबिल की अखण्ड आराधना चल रही है। 36 गुणों के दायित्व को संभालने का बड़ा काम है। इस सबका ध्यान रखते हुए ही 36 दिवसीय आचार्य पद महोत्सव का आयोजन करने का विचार किया है। मध्यप्रदेश गुजरात, महाराष्ट्र के नगरों में यह सब शासन प्रभावना के कार्य हो रहे है।

डॉ. जैन– आप हर्षसागर कैसे हो गये ? कपड़वंज में पधारने वाले गुरुओं की प्रेरणा इस मार्ग में आगे बढ़ाने में सहायक

रही। मेरी वैराग्य की भावना पुष्ट होती गई। पूज्य आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. और पूज्य पंन्यास श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. की निश्रा में 9 वर्ष की उम्र में उपधान तप किया, दूसरा उपधान आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी की निश्रा में किया, भावना को बल मिला और पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी की निश्रा में जीवन समर्पण कर दिया तब लगा मुझे कल्पवृक्ष मिल गया।

डॉ. जैन- धर्म और राजनीति के बारे में ?

हर्ष- जब तक राजनीति धर्मनीतियों से नहीं जुड़ेगी तब तक न देश का उत्थान होगा न शासन का। शासन करने वाले राज्यपुरुषों पर संतों का प्रभाव होना आवश्यक है।

डॉ. जैन- धर्म में धन का बढ़ता प्रभाव ?

हर्ष- यह केवल लोगों की मान्यता है जगत में बहुत लोग धनी है पर धर्म सामान्य प्रजा ही अधिक करती है, सामान्य प्रजा ही धर्म को आगे बढ़ा रही है, धन का प्रभाव तो क्षणिक होता है।

डॉ. जैन-आप आराधना, जप आदि कौन सा करते है ?

हर्ष- आपके पास कितना धन है ? क्या यह बात हमें बतलाते है ? नहीं ना। उसी तरह हम अपनी अध्यात्म आराधना का धन आपको कैसे बतला सकते है ?

डॉ. जैन- ईश्वरीय शक्ति का कोई अनुभव ?

हर्ष- जिस प्रकार मिठाई खाते है तो उसके स्वाद का पता चलता है जैसे उसका अनुभव होता है वैसे ही जिनशासन की आराधना-साधना का लाभ तो मिलता ही है सूक्ष्म की ताकत अनंत है साधना से सिद्धि तो मिलती ही है।

डॉ. जैन- लोगों के लिये आपका संदेश ?

हर्ष- परमात्मा के शासन की मैत्री प्रमोद, करुणा माध्यस्थ ये चार भावना यदि जीवन में समाहित हो जावे तो इस कलिकाल में भी राम राज्य का निर्माण हो सकता है ?

डॉ. जैन- आगमोद्धारक जैन मासिक के बारे में ?

हर्ष- आज के प्रचार-प्रसार के युग में आगमोद्धारक मासिक ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर रही है। निःसंदेह रुप में उसमें स्थान करने वाले पुण्यात्मा ज्ञानार्जन कर सच्चे साधक आराधक बन सकते हैं।

✻ काम का आलस और पैसों का लालच, हमें महान बनने नहीं देता।

अभिमानी का सर नीचा

✻ एस.सी.कटारिया, रतलाम

अभिमानी के हृदय में यदि आप अभिमानी या अंधकार के पर्दे को हटा दें तो तुम्हें भी अपने जीवन में भी स्थित अपनी निस्फलता और कठिनाईयों के कारणों का पता अपने आप ही लग जाएगा। यह अक्षरशः सिद्ध है। एक कस्बे के कुम्हार द्वारा अपने कठिन श्रम से मिट्टी खोद कर उसमें पानी का मिश्रण कर चाक पर घुमाकर, धूप में सुखा कर, आग में पका कर उस घड़े को अन्य के साथ बाजार में बेचने को ले आया। थोड़ी देर बाद उसका एक खरीददार आया, उसे देखा परखा फिर उसे ठोक बजा कर भावताव कर खरीद कर घर ले गया। घड़ा देखकर गृहणी बड़ी प्रसन्न हुई कि दूध रखने के लिये एक बड़े बर्तन की पूर्ति इससे हो गई। सच में उसके आदमी ने आज एक अच्छा सार्थक किया। उसने उसमें दूध भरा और तिवाई पर रख दिया। पानी भरने वाले घड़े में दूध भरे जाने से उसका अहंकार जागृत हो गया। वह बुदबुदाने लगा कि उससे बढ़कर दूसरा कोई भाग्यशाली नहीं है। लकड़ी की तिपाई ने उसका घमंड भरा ऐसा प्रदर्शन देखा तो वह गुस्से में बोली- मूर्ख ! जरा होश में आकर बात कर। आज तू भले ही मेरे सिर पर बैठा हों, पर याद रख। वह चॉक मुझसे लकड़ी से बना था, सिर पर तेरा जन्म हुआ था, चॉक न होता तो तू न होता। पास में ही वह मिट्टी का चुल्हा था। मिट्टी बोली- मैं अगर नहीं होती तो तेरा एक-एक कण बिखरा रहता। तू पिण्ड रुप में कैसा होता ? घड़ा कैसे बनता ? पास में चुल्हे में जलती आग भभक उठी। सब अपनी-अपनी कहें जा रहे हो। मुझे कोई नहीं जानता क्या ? मैं तो आग हूं, मैंने ही अपनी गोद में तुझे तपा कर पक्का बनाया नहीं तो पानी लगते ही तू गल जाता। फिर कौन तुझमें दूध रखता ? लेकिन घड़ा फिर भी घमंड में था और अभिमान के कारण किसी की वह कुछ भी नहीं सुन रहा था, इतने में से दूध की सुगन्ध से वहां एक बिल्ली आई और उसने दूध पीने के लिए दूध घड़े में मुंह डाला, घर मालकिन बिल्ली देख कर उसे भगाने उसके पीछे दौड़ी, बिल्ली भाग गई किन्तु घड़ा तिपाई से नीचे गिर पड़ा और उसके घमण्ड के साथ चुर-चुर हो गया। ज्ञानीजनों ने भी कहा है कि-

''अभिमानी के हृदय में, क्या सद्‌गुण का काम,
फटी जेब में क्या कभी, टिक सकते है नगदी दाम।'

पुत्रों के विषय में श्राविका की उच्च भावना

संभात निवासी एक श्राविका लिखाती है- ''मेरे दो पुत्र है, दोनों में उच्च भावना जाग्रत करके साधु-जीवन अपनाने के लिये प्रेरित करना है ! कम से कम एक तो दीक्षा अंगीकार करे ऐसी मेरी तीव्र इच्छा है, अंतर की अभिलाषा है। मेरे पति इतने धर्मिष्ठ नहीं है। दीक्षा में वे अंतराय न करें इसलिए धीरे-धीरे मैं उन्हें धर्माभिमुख करना चाहती हूं और प्रतिदिन प्रभु को प्रार्थना करती हूं !!''

अपने सुपुत्रों को साधु बनाने के लिये इस श्राविका ने उन्हें खूब धार्मिक संस्कार दिये हैं। दोनों को पाँच प्रतिक्रमण सिखाये है और जीवविचार, नवतत्व आदि का अभ्यास करवाती है । प्रतिदिन पाठशाला भेजती है । चौविहार, नवकारशी करवाती है । प्रतिदिन पूजा और छुट्टी के दिन अष्टप्रकारी पूजा करवाती है।

एक जैन के रुप में आपकी भावना क्या है ? अपनी संतानों को साधु, अच्छे श्रावक बनाना चाहेंगे या डॉक्टर बनाना चाहेंगे ? यह तो आप निश्चित मान लीजिए कि जो धर्ममार्ग को अपनायेगा वह सबको सुखी बनायेगा। जो डॉक्टर बनेगा वह शायद सब को रुलाये ऐसा संभव है। इन बातों को गंभीरता पूर्वक चिंतन मनन करें और आप एवं आपके बच्चे पुत्र-पुत्रीयां तथा अन्य सब लोग सुखी किस प्रकार हो सकते है इसके लिये कोई मार्ग खोज निकालें।

धर्म के द्वारा ही इस लोक में एवं परलोक में आत्मिक सुख-शांति अवश्य मिलती है।

सच्चे गुरु :- *सच्चे गुरु केवल अपनी वाणी से ही शिष्यों को शिक्षा नहीं देते बल्कि अपने जीवन से भी मूक शिक्षा देते हैं। शिष्य उनकी वाणी से आध्यात्मिक या पारमार्थिक शिक्षा प्राप्त करता हुआ उनके जीवन से भी निर्लोभ, निःस्वार्थ, नैतिकता, सदाचार तथा चारित्र-निर्माण की शिक्षा प्राप्त करता चला जाता है। सद्गुरु किसी प्रकार के लोभ-स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने शिष्यों को ज्ञान-दान नहीं देते। उनका उद्देश्य अपने शिष्यों का जीवन-निर्माण करना होता है और इसलिए उनका ज्ञान-दान सर्वागीण होता है। वे अपने शिष्यों को मन, वचन और शरीर से पूर्ण शुद्ध, पवित्र और उच्च बनाने का प्रयत्न करते हैं।*

वास्तव में सुखीः- दुर्लभ वस्तु की चाह करना और सुलभ वस्तु से ऊब जाना इन्सान का स्वभाव है। ऐसा मन की चंचलता के कारण होता है। जो वस्तु हमारे पास नहीं है उसकी हम लालसा रखते हैं और जो हमारे पास है उसमें हम देर सबेर ऊब जाते हैं । जो हमारे पास हो उससे ऊब जाना कोई बड़ी बात नहीं । गरीब गरीबी से ऊब जाता है तो सफल व्यक्ति भी सफलता से ऊब जाता है । रोगी रोग से ऊब जाता है और भोगी भोग से ऊब जाता है । लेकिन कमाल की बात तब है जब हम उससे ऊब सकें जो हमारे पास नहीं है। जो हमें प्राप्त नहीं है उसके प्रति हम विशेष चाह न करें। मिल जाय तो वाह वाह !! इसके लिये बहुत प्रतिभा चाहिये। जो ऐसी प्रतिभा वाले है दरअसल चाहिये वे ही सुखी है।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लियेः-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

सिद्धशिला

सचित्र जैन

सर्वार्थसिद्ध विमान से 12 योजन ऊपर 11 रज्जू वलयाकार विस्तार में 45 लाख योजन की लम्बी-चौड़ी उत्तान छत्र के आकार वाली सिद्धशिला है। इसके आठ नाम है- 1- ईषत्-रत्नप्रभा आदि सात पृथ्वियों की अपेक्षा यह पृथ्वी छोटी है, 2- ईषत्प्राग्भार-अन्य पृथ्वियों की अपेक्षा इसकी ऊंचाई कम है, 3- तन्वी-शेष पृथ्वियों से पतली है, 4- तनुतन्वी-मक्षिका के पंख से भी इसका चरम भाग अधिक पतला है, 5- सिद्धि-यह सिद्धक्षेत्र के समीप है अथवा यहां पहुंच कर जीव कृतकृत्य हो जाता है, 6- सिद्धाचल- यह सिद्धों का स्थान है, 7- मुक्ति- यहां कर्मों से मुक्त जीव है, 8- मुक्तालय- यह मुक्त जीवों का स्थान है। इसके अतिरिक्त लोकाग्र, लोकाग्रस्तुपिका (शिखर) लोकाग्र बुध्यमान और सर्व प्राण-भूत-जीव-सत्तव सुखावहा-ये चार नाम और भी हैं।

मनुष्य क्षेत्र की तरह ही सिद्धशिला की लम्बाई-चौड़ाई भी 45 लाख योजन है। इसकी परिधि 1 करोड़ 42 लाख 30 हजार 249 योजन से कुछ अधिक है। इसका मध्य भाग 8 योजन मोटा है। उसके आगे चारों ओर इस पृथ्वी की मोटाई क्रमशः प्रति योजन अंगुल पृथक्त्व कम होती-होती चरम भाग में मक्खी के पंख से भी अधिक पतली हो गई है। इसका वर्ण शंख, चन्द्रमा, गोक्षीर और कुंदपुष्प से भी कई गुना श्वेत है, यह सम्पूर्ण स्फटिक रत्नमयी है। इस पृथ्वी के एक योजन ऊपर एक कोस के छठे भाग में जो 333 धनुष और 32 अंगुल परिमाण है वहां अनंत सिद्ध भगवान विराजमान है। यहीं लोक का अंत हो जाता है।

लोक के चारों ओर अनन्त और असीम अलोकाकाश में आकाश द्रव्य के अतिरिक्त और कोई द्रव्य नहीं होता। एक मात्र आकाश ही आकाश है।

सिद्धक्षेत्र में सिद्धों की अवस्थितिः- सिद्धशिला के ऊपर और लोकांत के नीचे जो एक योजन का मध्यभाग है उसमें भी ऊपर के एक कोस का छठवां भाग ही सिद्धक्षेत्र है। सभी मुक्तात्माओं के आत्मप्रदेश इसी सिद्धक्षेत्र में अवस्थित है। मात्र विशेषता यह है कि जिनके अंतिम शरीर की जो भी अवगाहना होती है, उसके दो-तिहाई भाग में उनके आत्म-प्रदेश धनीभूत होकर रहते हैं। सिद्ध होने से पूर्व जघन्य दो हाथ, मध्यम 7 हाथ और उत्कृष्ट 500 धनुष की अवगाहना वाले जीवों की सिद्धक्षेत्र में 2/3 भाग अवगाहना होती है। अतः सिद्धों की अवगाहना जघन्य 1 हाथ 8 अंगुल मध्यम 4 हाथ, 16 अंगुल उत्कृष्ट 333 धनुष 32 अंगुल की रहती है। सिद्धात्मा के सिरेभाग की अंतिम ऊंचाई वे जो आत्मप्रदेश है। वे नियम से लोकांत का स्पर्श करते रहे हुए है क्योंकि लोकांत के बाहर धर्मस्तिकाय अधमीविकाय की सत्ता नहीं है। अतः सिद्धजीव लोकांत तक जाकर वहीं स्थिर हो गये है। जैसे गैसवाले गुब्बारे किसी हाल में छोड़े जाए तो उन सबका ऊपरी भाग हाल की छत को स्पर्श करता है उसी प्रकार सभी सिद्धों के आत्मप्रकाश भी लोकांत का ही स्पर्श करके रहे हुए है, अंतिम समय की बैठी हुई, खड़ी हुई जो भी मुद्रा की अवस्था है वह सिद्ध होने के बाद भी यथावत रहती है।

एक कोस 2000 धनुष का होता है, अतः 2000 धनुष का छठा भाग यानि 2000 भागित 6=333 धनुष 32 अंगुल। सिद्धजीवों की यह गतिक्रिया अंतिम है, लोकान्त में अवस्थित हो जाने के बाद वे आत्म-प्रदेश वहीं स्थिर व अकम्प हो जाते हैं। सिद्ध जीवों की विशेष जानकारी के लिए 9 द्वार कहे गये हैं।

1- सत्पद प्ररुपणा-मोक्ष सदा से था और सदा रहेगा।

2- द्रव्य द्वार- सिद्ध अनन्त हैं वे अभवी जीवों से भी अनन्त गुणे अधिक हैं।

3- क्षेत्र- सिद्ध जीव सिद्धशिला के ऊपर 1 योजन के अंतिम कोस के छठे भाग में 333 धनुष 32 अंगुल प्रमाण क्षेत्र में रहते हैं।

4- स्पर्शन- क्षेत्र से कुछ अधिक भाग का वे स्पर्श करते हैं।

5- काल- एक सिद्ध की अपेक्षा आदि है अन्त नहीं। सभी सिद्धों की अपेक्षा सिद्ध अनादि अनन्त है।

6- भाग- वे लोक के असंख्यातवें भाग पर रहते हैं।

7-भाव- सिद्धों में क्षायिक भाव, जीवत्व भाव और परिणामिक भाव है।

8- अन्तर- सिद्ध जीव पुनः लौटकर नहीं आते, अतः उनका अन्तर नहीं पड़ता।

9- अल्पबहुत्व- सबसे कम नपुंसक सिद्ध होते है,

उससे स्त्री पर्याय से सिद्ध होने वाले संख्यात है और पुरुष उससे संख्यात गुणा अधिक सिद्ध होते हैं। एक समय में नपुंसक 10 स्त्री 20 और पुरुष 108 सिद्ध हो सकते हैं।

मोक्ष के योग्य अधिकारीः-

1- भव्यसिद्धिक, 2- बादरजीव, 3- त्रसजीव, 4- संज्ञी, 5- पर्याप्त, 6- वज्र ऋषभ नाराच संघयण वाला, 7- मनुष्य गति, 8- अप्रमादी, 9- क्षायिक सम्यक्त्वी, 10-अवेदी, 11-अकषायी, 12-यथाख्यातचारित्री, 13- स्नातक निग्रंथ, 14- परम शक्ललेश्यी, 15- पंडितवीर्य, 16- शुक्लध्यानी, 17- केवलज्ञानी, 18-केवलदर्शनी और 19- चरम शरीरी।

ये 19 प्रकार के जीव मोक्ष के अधिकारी हैं। सभी मुक्त आत्माएं शरीर रहित हैं, अतः शरीर संबंधी किसी भी प्रकार की उपाधि वहां पर नहीं है। वहां जन्म, जरा, मरण, भय, रोग, शोक, दुःख, दरिद्रता, कर्म, काया, मोह, माया नहीं है। वहां स्वामी-सेवक व्यवहार भी नहीं है। वहां न भूख है न प्यास, न रुप है न रस-गंध-स्पर्श। वहां न स्त्री है, न पुरुष है न नपुंसक। मात्र संपूर्ण ज्ञाता-परिज्ञाता और शुद्ध निर्मल आत्मा है। सिद्धों के मुख्य आठ गुण हैं जो अष्टकर्मो का क्षय करने पर प्रगट हुएः-

1- अनन्तज्ञान, 2- अनन्तदर्शन, 3- अनन्त सुख 4- अनन्तचारित्र, 5- अटल अवगाहना, 6- अमूर्तिक, 7- अगुरुलघु, 8- अनन्तवीर्य।

वे ज्योति में ज्योति की तरह एक दूसरे में समाये हुए है। जहां एक सिद्ध है वहां अनन्त सिद्ध है और जहां अनन्त सिद्ध है वहां एक सिद्ध है। वे अपने केवलज्ञान के द्वारा संसार के समस्त द्रव्य-पर्यायों को एक साथ देखते हैं। वे पौद्गलिक सुख-दुखों से रहित होकर अनन्त आत्मिक सुखों में सदा लीन परम आत्म-ज्योति स्वरुप है। उस चरम व परम सच्चिदानंद अवस्था को प्राप्त करना ही हमारा लक्ष्य है।

धर्मनिष्ठ विद्यार्थी

55 वर्ष पहले की बात है। मुंबई के अति धनाढ्य रावबहादुर प्रतापशीभाई का पौत्र अर्थात् कांतिभाई का पुत्र इन्द्रवदन सेंट झेवियर्स हाईस्कूल में अभ्यास करता था। वनस्पति में भी जीव है ऐसा मुनिराजों के सत्संग से जानने के बाद पी.टी. पीरियड में वह बेंच के नीचे छुप जाता क्योंकि घास पर ही उन्हें खेलना होता था। जब पी.टी. के अध्यापक को पता चले कि इन्द्रवदन आया नहीं है तब वे तीन-चार लड़कों को भेजते और वे लड़के इन्द्रवदन को उठा लाते और घास पर बैठा देते। इस समय इन्द्रवदन का शरीर ही नहीं, मन भी कांप उठता, वह सोचता था कि इस समय इन जीवों का क्या होता होगा...?

विद्यालय भी इन्द्रवदन बड़ा तिलक करके ही जाता और पानी भी उबला हुआ ही साथ रखता। जन्मदिन पर मिले हुए सौ रुपये से लड्डू लेकर वह गरीबों को बांट देता ! माता पुराने अखबार बेचकर जो पैसे रखती, वह उन पैसों से मिठाई तथा आम के मौसम में आम खरीदकर गरीबों में बांट दिया करता।

आज यही इन्द्रवदन वर्तमान समय के शासन के प्रखर प्रभावक पूज्यपाद पंन्यास श्री चंद्रशेखरविजयजी बने है। जो कई वर्षो तक शासन की भव्य प्रभावना करते रहे हैं...!

हे जैन धर्मानुययीजनों...! आप भी अपनी प्रिय संतानों को धर्म के संस्कार देंगे ना...?

दुःख का कारणः- **मनुष्य की पीड़ा क्या है ? मनुष्य की विडम्बना क्या है ? बस एक ही विडम्बना है- वह जिस वस्तु को, जिस व्यक्ति को, जिस पदार्थ को पकड़ लेता है फिर उसे छोड़ना नहीं चाहता और प्रकृति का यह नियम है कि कोई वस्तु, कोई व्यक्ति, कोई पदार्थ, स्थायी नहीं है, नित्य नहीं है। यह तो एक दिन छूटकर ही रहेगा। उससे वियोग होगा ही। बस, यही है मनुष्य की पीड़ा। यही है मनुष्य की विडम्बना। मनुष्य बड़ा नादान है। क्षुद्र चीजों से दोस्ती कर लेता है। प्यार कर लेता है। क्षुद्र चीजों से मोह बना लेता है फिर वे गले की फांसी बन जाती है। धन से दोस्ती, स्वजन से दोस्ती, परिवार से दोस्ती, पति-पत्नी से दोस्ती, सोने-चांदी से दोस्ती। सारी जिंदगी को इन्हीं चीजों पर मनुष्य दॉव पर लगा देता है। फिर जब ये चीजें छिनती है, छुटती है, तो मनुष्य बेहाल हो जाता है, पीड़ा से भर जाता है।**

संघपति का आदर सत्कार करने से रोग का नाश....

करीब 70 वर्ष पहले की यह घटना है.... श्रेष्ठी नगीनदासभाई ने पाटण से श्री भद्रेश्वर तीर्थ की यात्रा हेतु संघ निकाला। मार्ग में एक गांव के एक श्रावक ने संघपति को आग्रह किया- ''मेरे घर पधारिये।'' संघपति नगीनदास भाई ने कहा- ''समय नहीं है, संघ को विलम्ब हो रहा है।'' परन्तु अत्यंत भावपूर्वक आग्रह करते हुए उस श्रावक ने कहा- ज्यादा नहीं,केवल दो मिनट के लिए ही सही, लेकिन आपको आना तो पड़ेगा ही। पहले के समय में अति श्रीमंत लोग भी दाक्षिण्य गुणवाले होते थे। संघपति उसकी भावना को पूर्ण करने उस श्रावक के घर गये। उस सामान्य स्थितिवाले श्रावक ने संघपति का स्वागत करते हुए उन्हें दूध दिया। थोड़ा दूध ग्रहण करके संघपति चले गये। बचा हुआ दूध उस श्रावक ने अत्यंत श्रद्धा के साथ पिया...! चमत्कार हुआ, उस श्रावक को लंबे समय से तकलीफ थी कि खाया हुआ कुछ भी पेट में टिकता नहीं था। दूध पीते ही उसकी यह तकलीफ दूर हो गई ! उस श्रावक ने सुना था कि संघपति को भविष्य में तीर्थंकर पद प्राप्त होता है, ऐसा ज्ञानीजनों का कथन है और इस श्रावक के मन में इस पर दृढ़श्रद्धा थी। अतः उसने संघपति श्री नगीनदासभाई का पिया हुआ दूध प्रसाद मानकर पी लिया- यह सोचकर कि इस प्रसाद से उसका रोग अवश्य दूर होगा और उसकी श्रद्धा ने परिणाम दिखाया.... वह स्वस्थ हो गया...!

आदर-बहुमान में ऐसे अद्भूत चमत्कार दिखाने की अचिंत्य क्षमता है !

मैं पाठकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं, संघ एवं संघपति का शास्त्रों में बड़ा महत्व दिखाया गया है। सम्पन्न व्यक्ति अगर धर्ममार्ग पर अपने धन का सद्व्यय करें तो आपके मन में ऐसे दानवीर के प्रति आदर का भाव जाग्रत होता है या ईर्ष्या का ? आप उसकी उदात्त भावना की अनुमोदना करेंगे या निंदा ? कुछ लोग धर्मनिष्ठ दानशील सम्पन्न लोगों की निंदा करते है परन्तु वास्तव में जिनकी धर्म बुद्धि उन्हें दान आदि धर्मकार्य में प्रवृत्त होने को प्रेरित करती हो और जिनका धन भी नीति के मार्ग से ही अर्जित किया गया हो ऐसे सम्पन्न व्यक्ति तो अनुमोदना के अधिकारी है और उनके कार्यो की प्रशंसा ही की जानी चाहिये।

हे धर्मानुरागी सज्जनों ! बिना कुछ खर्च किये प्राप्त होनेवाले अनुमोदना का लाभ गंवाकर निंदा आदि के पाप से लाखों योजन दूर ही रहना अधिक श्रेयस्कर नहीं है ?

शुभ-अशुभः- ***पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ की बड़ी और गहरी परिभाषाएं की गई है पर सरल परिभाषा यही है कि जिस काम को करने में भय, शंक और लज्जा का अनुभव हो उसे अशुभ समझो और मत करो। जिस काम को करने में आनंद उत्साह और प्रीति का अनुभव हो उस काम को शुभ समझो और ऐसे ही काम करो। इस प्रकार अपने अन्तरमन की आवाज से स्वयं निर्णय करो। आत्मा की आवाज कभी अशुभ नहीं होती।***

अध्यात्म मिले, आवेश मिटे

अध्यात्म का तात्कालिक लाभ क्या ? भोजन करते हैं और उसी वक्त तृप्ति मिलती है। दीया जलाते है और उसी वक्त उजाला मिलता है, उसी तरह अध्यात्म से उसी वक्त क्या मिलेगा ? अध्यात्म जीवन में आते ही कषाय और विषयों का आवेश खत्म हो जाता है। यही उसका प्राथमिक चिन्ह है। विषय-कषायों का आवेश होने पर भी ''अध्यात्मिक'' मानना निरी भ्रमणा है।

विषय और विषयों के आवेश में कषाय और कषायों के आवेश में क्या फर्क ?

दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। विषय-कषाय तो प्राथमिक साधक को भी हो सकते हैं, लेकिन उनका आवेश उसे नहीं होता। विषय-कषायों की वृत्ति जगने पर उस तरफ प्रवृत्ति होने में और उसके आवेश में आ जाना, भान भूल जाना, अंधा बन जाना-इन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है।

भोजन की इच्छा हुई और उसमें प्रवृत्ति हुई, यह सामान्य है, किन्तु उसके लिये दूसरों का छीन लेना, स्वाद के लिये अभक्ष्य खाना, यह रस-लपंटता है।

उसी तरह विषय कषायों के आवेश में अंधा बन जाना- यह विषय-कषायों का आवेश है। आवेश सदा मूर्च्छित तुटेगी तो ही आवेश घटेगा।

अध्यात्म का काम मूर्च्छा तोड़ना है, स्व में प्रवेश कराना है, जागृति का दीपक जलाना है।

एक बार जागरण की ज्योत प्रकट गई तो दूसरा सब अपने आप होता रहेगा।

शिक्षाशतदोधक

✻ श्रुतरत्न गणिवर श्री वैराग्यरति विजयजी म.सा.

शास्त्रों में साधना के दो मार्ग बताये हैं- व्यवहार मार्ग और निश्चय मार्ग। व्यवहार मार्ग तप, जप, क्रिया, आचरण आदि को महत्व प्रदान करता है। निश्चयनय ज्ञान और उसके आधार पर संस्कारित पुख्ता समझ को प्राथमिकता देता है। ये दोनों नय अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण है। ऊपरी नजर से भले यह दिखाई पड़ता है कि, ये दोनों परस्पर विपरीत है मगर फिर भी एक-दूसरे के पूरक है।

यदि साधक दोनों नयों को एक-दूसरे का पूरक बना पाए तो साधना का स्वाद और साधना के फल दोनों प्राप्त कर सकता है। प्रारंभिक कक्षा के साधक व्यवहार और निश्चय का समन्वय नहीं कर पाने के कारण या तो व्यवहार को अधिक महत्व देते है अथवा निश्चय की तरफ उनका ध्यान अधिक होता है। अधिकतर प्रारंभिक साधक व्यवहार को मुख्य और एक मात्र साधना का मार्ग समझकर साधनारत हो जाते हैं। समन्वय के अभाव में यदि व्यक्तिगत समझ आग्रह में बदल गई तो मार्ग भटक जाएगा। ऐसी स्थिति पैदा न हो इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर अनुभवी साधक समय-समय पर निश्चय नय का समान महत्व समझाते हुए शास्त्र की रचना करते हैं।

यह ग्रंथ **शिक्षाशतदोधक**, पुरानी गुजराती भाषा में रचित निश्चयनय की महत्ता समझाता ग्रंथ है। 18 वीं सदी में उपाध्याय श्री हंसरत्न गणी द्वारा रचित है। शिक्षा अर्थात् निश्चयनय का शिक्षण और शत अर्थात् शतका दोधक अर्थात् दोहे। इस कृति में कुल एक सौ आठ दोहे हैं। ग्रंथकार ने इसमें जैन एवं अजैन मत-संप्रदाय की उपासना पद्धतियों का अनुसरण करनेवाले साधक को अपनी नजरों के सामने रखकर इसकी रचना की है।

सर्वप्रथम ग्रंथकार ने अनुभव का माहात्मय प्रस्तुत किया है। ग्रंथ की शुरुआत में ही उन्होंने परमात्मा को अनुभवगम्य के रुप में देखा है। इसके बारे में नौवें दोहे में वे कहते हैं- **करोड़ों वर्षों तक तप करो और अनंत शास्त्रों का अभ्यास करो मगर अनुभव के अभाव में सब व्यर्थ है।** अपनी बात के समर्थन में उन्होंने कबीर का दोहा भी जोड़ा है। **परमात्मा के नाम अलग-अलग होंगे मगर उनका स्वरुप तो एक समान है और वह है-वीतरागी। प्रत्येक धर्म में परमात्मा को सांसारिक उपाधियों से पर मानने में आया है। धर्म की उपासना पद्धतियों का आयोजन परमात्म-तत्व की उपलब्धि के लिए किया जाता है। केवल क्रिया करने से परमात्मा की उपलब्धि नहीं हो जाती है।** (14-15) आत्मा का अनुभव परमात्मा की प्राप्ति का परम उपाय है। आत्मा की अनुभूति करने के लिए सद्‌गुरु की जरुरत पड़ती है। सद्‌गुरु की शिक्षा के अभाव में तप, व्रत, दान आदि सब निष्फल हो जाते हैं। संसार समुद्र स्वरुप है, जीवन नाव है और सद्‌गुरु नाविक है। गुरु के बिना जीवनरुपी नाव को स्थिर रख पाना है संभव नहीं है। (14-15) **सद्‌गुरु ज्ञानरुपी सली से अंतर में चिपक मोह की परतों को उतारकर बाहर फेंक देते हैं और अंतरदृष्टि जागृत करते हैं। (16) अपना सर्वस्व समर्पित करके युगों तक गुरु के चरण की सेवा की जाए तब भी उनके उपकारों से मुक्त होना संभव नहीं है। (17) गुरु के गुण अनंत है जिन्हें एक जीभ से गाया नहीं जा सकता। गुरु सच्चा बोध देकर शिष्य के अगाध संसार को गाय के पैर तले की जमीन जितना छोटा कर देते हैं। (18) गुरु चंदन जैसे हैं जो स्वयं गुणों से सुवासित है और दूसरों को भी उन गुणों से सुरभित बना देते हैं (20)**

ग्रंथकार ने यहां गुरु का महिमागान करते हुए गुणरहित गुरु से बचने की सतर्कता भी बतायी है। गुरु का वेष धारण कर लेना आसान है, गुरुपद धारणा कर लेना आसान है, गुरुपद धारण कर लेना भी सरल है, गुरु नाम धारण करना भी आसान है मगर सच्चा गुरु बन पाना काफी कठिन है। सच्चे गुरु और गुणरहित गुरु के बीच केवल आचार अथवा व्यवहार का ही अंतर नहीं होता, बल्कि बोध का भी अंतर होता है। **कोई व्यक्ति बगैर गुरु बनाए स्वयं गुरु बनकर कभी किसी को संसार पार नहीं करवा सकता। ऐसे गुरु तो लोहे की शिला जैसे हैं। सच्चे गुरु लकड़ी की नाव जैसे होते हैं। कलिकाल में गुण बिना के गुरु काफी मिल जाएंगे। अगर गुरु और शिष्य के बीच परस्पर विवेक नहीं होगा तो दोनों खाई में गिरेंगे।**

यहां प्रसंगानुकूल दोहाकार खुली आंख वाले और अंध व्यक्ति की तुलना की सुन्दर व्याख्या बताते हैं-**जिसे जगत में सभी दिखायी देते है, जिसे पर स्त्री माता दिखाई देती है और पराया धन धूल जैसा दिखता है वह**

आंखवाला है। मगर जो पर स्त्री को बुरी नजर से देखता है और पीड़ा देता है वह आंख होकर भी अंधा है। (24-25) जिसका हृदय सरल हो, कदाचित वह पढ़ा लिखा न भी हो फिर भी वह श्रेष्ठ कक्षावाला है और जो पंडित-कक्ष का होकर भी मैले मन वाला हो तो उसकी बुद्धि उसे मुबारक (28) आत्मार्थी साधक के लिए सद्‌गुरु की प्राप्ति काफी महत्वपूर्ण होती है। गुणरहित गुरु का अनुयायी साधक यहां-वहां भटकता रहता है, उसकी प्रगति रुक जाती है और अपने लक्ष्य से भी वंचित रह जाता है। (30-31)

अनेक साधक ऐसे भी होते हैं जिनका लक्ष्य आत्म साधना के बजाय आत्मप्रशंसा होता है। वे गुरु के पास बोध लेने के बजाय अपनी महिमा बढ़ाने आते हैं। गुरु की वाहवाही करके गुरु के समक्ष अपना प्रभाव जमाना चाहते है। गुणरहित गुरु और साधना का लक्ष्य रहित शिष्य जिस नाव में एक साथ बैठते है, उसको डूबा देते हैं। वे अन्य लोगों को भी डूबा देते हैं। साधना की इच्छारहित साधक गुरु के पास ज्ञान लेने नहीं आता है। उसे गुरु के उपदेश में रस नहीं होता है। वह व्यक्ति पूजक बन जाता है। शिक्षाशत दोहे में उपाध्यायजी श्री हंसरत्नगणी बहुत सटीक बात कहते हैं-

जिस तरह सन्निपात जैसे असाध्य रोग पर कोई दवाई नहीं होती उसी भांति अयोग्य, अर्थात् स्वार्थी और पूर्वग्रह-ग्रसित शिष्य के लिए कोई उपदेश काम नहीं आता है। उल्टा उसके कारण उपदेशक को क्लेश होता है। अयोग्य व्यक्ति आत्मा की सच्ची बात सुनने में असमर्थ रहता है। कदाचित सुन ले मगर पचाने में असमर्थ होता है। ऊपर से दलीलें देकर उपदेशक को हैरान भी करता है। (32) ऐसे अयोग्य साधक पूर्वग्रह अथवा व्यक्तिराग से पीड़ित बने रहते हैं। जिस तरह बुरे मंत्र से वशीभूत व्यक्ति अपनी ही विष्ठा खाता है उसी तरह अयोग्य साधक संसार की विष्ठा जैसी बातों में रस होता है। (33) सद्‌गुरु को उनकी वृत्ति देखकर दया आती है, उसकी विपरीत प्रवृत्ति को देखकर उसे सच्ची समझ देने का यत्न करें तो साधक गुस्सा करता है। चल-विचल होता है। (34) अयोग्य व्यक्ति को सलाह देने से केवल नुकसान ही होता है, ऐसी सलाह देते हुए दोहाकार कहते है- **सांप को कितना भी दूध पीलाओ वह डंख मारने से बाज नहीं आता है। अयोग्य व्यक्ति अच्छी बात सुनकर भी क्रोध करता है।** (35-36)

साधक अयोग्य इसलिए बनता है कि उसे सच्ची समझ नहीं मिली होती है। समझ सच्ची हो तो कदाग्रह पैदा नहीं होता है। जिनके प ास सच्ची समझ है उनका लक्ष्य आत्मा होती है। वे आत्मा की शोध का मार्ग ढूंढते हैं। उनके व्यक्तित्व और विचारों में शास्त्रों का सार झलकता दिखायी पड़ता है।

मानवता:- ***मन, वचन और कर्म द्वारा हम किसी को नहीं सताएं, यह सताना ही तो अमानवीय दानवरुपी कार्य है। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में मानव जीवन सार्थक बनाने के लिए अगर हम दानवरुपी अमानवीय प्रवृत्तियों को ताक में रखकर सच्चे मानव बनने की प्रक्रिया में लग जाएं तो हम निश्चित रुप में अपना जीवन सफलतापूर्वक नेक मानव के रुप में निर्वाह कर सकते है जिसका सबसे बड़ा लाभ तो हमें स्वयं ही मिलेगा, क्योंकि हमारा यह मानव रुप जो हमने बड़ी मेहनत से मुद्‌दत के बाद पाया है, उसका अच्छा सदुपयोग हमने किया। इसके लिये हमें चाहिये कि हम दानव न बन जाएं और सच्चे मानव के रुप में जीवन निर्वाह करें और इस अमूल्य मानव जीवन को सार्थक बनाएं।***

धर्म के प्रति आस्था

आज विश्व धर्म के प्रति अविश्वास और नैतिक मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना से सुलग रहा है। विज्ञान और औद्योगिकी की जबर्दस्त और चमत्कारिक उपलब्धियों के बावजूद मनुष्य का मन एक गहरे शून्य से भर गया है। वह नहीं जानता कि इस शून्य को कैसे भरा जाए। चूंकि आज लोग वैज्ञानिक ढंग से सोचते है, इसलिए वे हर चीज की छानबीन और पूछताछ करना चाहेंगे। ऐसी स्थिति में हमें उनके सामने कुछ ऐसी बातें रखनी होगी जो उन्हें बौद्धिक और नैतिक दोनों ही दृष्टियों से आश्वस्त कर सकें। हमें भी किसी ऐसे धर्म को उनके सामने नहीं रखना है जो युक्तिमूलक न हो। हर कोई हमसे पूछता है, क्या यह युक्तिसंगत धर्म है ? हर कोई धर्म के बारे में जिज्ञासा रखता है और यही वास्तव में हमारा अभीष्ट भी है। क्या धर्म का लक्ष्य तर्क और चेतना के मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है ?

वर्षीतप की महिमा.... जिन शासन की गरिमा

आदिमं पृथिवीनाथ, आदिमं निष्परिग्रहम्।
आदिम तीर्थ नाथं च, ऋषभ स्वामिनं स्तुमः ॥
- आचार्य हेमचन्द्र

इस युग के जो आदि नृपति थे,और प्रथम मुनिव्रतधारी।
प्रथम तीर्थकर्ता थे वे ही,ऋषभस्वामी जग जयकारी ॥

जैन काल गणना सिद्धांत के अनुसार एक कालचक्र में 12 आरे होते हैं। उसके छः आरे अवसर्पिणी काल कहलाते हैं और छः आरे उत्सर्पिणी काल। इस अवसर्पिणी काले के प्रथम, द्वितीय और तृतीय आरे के अंतिम समय तक मनुष्य प्रकृति आश्रित था। ''कल्पवृक्ष'' से उसकी सारी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाती थी। धीरे-धीरे परिवर्तन होने लगा। मनुष्य कुलों (समूहों, कबीलों) में बंटने लगे। कुलों के मुखिया को ''कुलाकर'' कहते थे। कुलकर व्यवस्था के चलते सातवें कुलकर हुए ''नाभिराजा''। उनकी पत्नि का नाम था- ''मरुदेवा''। नाभिराजा के काल तक ''युगलिया'' काल कहलाता था जिसका अर्थ है- एक माता-पिता से केवल दो संतानें एक साथ जन्म लेती थी और वे ही आगे चलकर पति-पत्नी का युगल (जोड़) बन जाते थे।

अवसर्पिणी काल का तीसरा आरा जब समाप्त होने पर था तब पुण्यशाली आत्मा ऋषभकुमार ने चैत्र अष्टमी की अर्धरात्री के समय जन्म लिया। प्राचीन जैन ग्रंथों में बताया गया है कि ऋषभदेव की आत्मा ने अनेक जन्मों में दीर्घकालीन तपस्याएं की थी। सेवा, दान, ध्यान, तप और शुभ भावों की उच्चता के कारण महान पुण्यों का उपार्जन किया था। ''धन्ना सार्थवाह'' बनकर उसने तपस्वी मुनियों आदि को दान दिया। ''जीवानन्द वैद्य'' के मानव भव में उसने निःस्वार्थ भाव से रुग्ण मुनियों व जनता की खूब सेवा की थी और ''वज्रनाभ''नामक राजा के जन्म में उसने दीन-दुखियों का पालन-पोषण किया था। उसने लोक सेवा के अनेक कार्य किये और अन्त में राज्य त्यागकर तथा मुनिव्रत धारणकर अपूर्व ज्ञान-उपासना, तप,ध्यान, तितिक्षा आदि दीर्घकालीन साधनाएं करके तीर्थकर नाम का उपार्जन किया। पूर्वभव के इन महान पुण्यों के कारण ऋषभकुमार के रुप में उनका जन्म हुआ। ऋषभकुमार अत्यन्त प्रतिभाशाली, दूरदर्शी और पुरुषार्थवादी थे। वे मानव मनोविज्ञान के गहरे विद्वान भी थे। उन्होंने कृषि

✻ मोहनलाल उमेदमलजी जैन (लुणावा) भायंदर

(खेतीवाड़ी) मषि (व्यापार) और असिकर्म (शस्त्र-संचालन) की भी शिक्षाएं दी। इसी प्रकार बर्तन बनाना, वस्त्र बनाना, भवन बनाना, शिल्प-कला, संगीत, नृत्य आदि अनेक विद्याएं सिखाकर उन्होंने समाज में ज्ञान, कला, मनोरंजन, व्यापार व राज्य व्यवस्था के मूलभूत सिद्धांतों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। पौराणिक ग्रंथों और गीतार्थ ज्ञानिओं द्वारा लिखित शास्त्रों के अनुसार ऋषभकुमार ने सुनन्दा नाम की एक अन्य युगलिया कन्या के साथ लग्न करके ''विवाह''प्रथा का प्रारंभ किया। फिर नाभराया ने सुमंगला के साथ उनका पाणिग्रहण संस्कार करवाया था। यथासमय सुमंगला के ''भरत'' व ''ब्राम्ही'' आदि 98 संतानें हुई तथा सुनन्दा ने ''बाहुबली'' और ''सुन्दरी'' को जन्म दिया। जनता की उचित मांग पर महाराज नाभिराय ने एक विशाल जन समारोह आयोजित कर ऋषभकुमार का राज्याभिषेक किया। इन्द्र के आदेश से कुबेर ने विनीता नगरी का निर्माण किया जो आगे चलकर ''अयोध्या'' नाम से प्रसिद्ध हुई। काल के प्रभाव में ऋषभ कुमार का आत्मीय चिंतन अत्यन्त दृढ़ हो गया कि- ''वस्तु के भोग में सुख नहीं बल्कि सुखतो भोग-इच्छा की निवृत्ति में ही है।'' महाराजा ऋषभ ने बड़े पुत्र भरत को ''अयोध्या''का, बाहुबली को ''तक्षशिला'' का तथा अन्य पुत्रों को छोटे बड़े राज्य सौंप कर स्वयं ने दीक्षा ग्रहण कर ली। भगवान श्रीऋषभदेव उस युग के प्रथम मुनि या भिक्षु थे। शुद्ध भिक्षा (गोचरी) के अभाव में वे एक वर्ष 40 दिन तक निर्जल-निराहार तप करते करते हस्तिनापुर नगरी पधारे। हस्तिनापुर में उस समय बाहुबली के पुत्र सोमप्रभ राजा राज्य करते थे। उनका पुत्र था- श्रेयांसकुमार। उस रात श्रेयांसकुमार ने एक विचित्र स्वप्न देखा- ''स्वर्ण के समान चमकने वाला मेरुपर्वत काला पड़ गया है और मैं दूध के कलश से उसका अभिषेक कर उसे पुनः उज्जवल बना रहा हूं।''

श्रीऋषभदेव प्रभु को राजमहल की ओर पधारता देखकर उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ। उसने तत्काल समझ लिया कि ''भगवान'' श्रीऋषभदेव एक वर्ष से निराहार विचरण कर रहे हैं और मुनि-मर्यादा के अनुकूल शुद्ध भिक्षा देने का किसी को ज्ञान नहीं है। श्रीऋषभदेव के प्रपौत्र, बाहुबलि के पौत्र, सोमप्रभ राजा के पुत्र, ऐसे श्रेयांसकुमार जैसे ज्ञानी-ध्यानी

राजकुमार ने प्रभु को भक्तिपूर्वक वन्दना की तथा शुद्ध व ताजे इक्षुरस भरे एक सौ आठ कलशों द्वारा श्रीआदिनाथ प्रभु को पारणा करने की सविनय प्रार्थना की। उग्र तपस्वी प्रभु श्रीऋषभदेव ने दोनों हाथों को अंजलिपुट बनाकर इक्षुरस ग्रहण किया। इस तरह इस जगत में धर्म-दान की प्रवृत्ति का शुभारंभ हुआ। इस पुनीत स्मृति में महिमा और गरिमा से ओतप्रोत यह वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन ''अक्षय तृतीया'' के नाम से पर्व और महोत्सव के रुप में संपूर्ण विश्व में मनाया जाने लगा।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हजारों लोग इस देश के विभिन्न नगरों, शहरों व गांवों में वर्षीतप की आराधना कर रहे हैं जो धन्य है। उन सभी को हम अपने अन्तरमन से भावपूर्वक सुख शाता पूछते है। हस्तिनापुर व पालीताना जैसे पावन तीर्थों के अतिरिक्त कई स्थलों पर शुभ दिन सामुदायिक वर्षीतप पारणों के आयोजन किये गये जाते है जो अनुमोदनीय और अनुकरणीय सुकृत्य है। आप सभी पाठकों से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि श्रेयांसकुमार के उच्चतम व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरित होकर आप भी अपने स्वजनों, परिजनों व परिचितों को उस दिन इक्षुरस से पारणा कराकर पुण्यार्जन अवश्य करें। उनके उग्र तप की अंतरमन से अनुमोदना करें।

जैन अक्षय-तृतीया और भारतीय मुद्रा

अक्षय-तृतीया:-** इतिहास के आईने में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ईसवी सन् 1818 में एक आना का यह सिक्का प्रचलित किया था जो जैन इतिहास से संबंधित है। सिक्के की एक तरफ कंपनी का नाम, सन् और -ONE ANNA खुदा हुआ है और उसके दूसरी तरफ आदेश्वर प्रभु को उनका प्रपोत्र श्रेयांसकुमार इक्षुरस द्वारा वर्षीतप का पारणा कराता हुआ बताया गया है। श्रेयांसकुमार कौन था??? वो ऋषभदेव का प्रपोत्र, बाहुबली का पौत्र और सोमप्रभ पुत्र था। इस ऐतिहासिक दस्तावेज को संभाल कर रखिए। वर्षीतप करने वाले समस्त तपस्वी धन्य है। कर्मो की निर्जरा कराने वाला उनका तप अनुमोदनीय है, अनुकरणीय है, धन्यवाद। **-मोहनलाल यु.जैन

खिड़की :- *किस बात की शेखी मारता है? तू चाहे जितना बड़ा हो तो भी मालिक को तेरा भरोसा नहीं है। रात्रि में या बाहर जाये तब तुझे बंध कर दिया जाता है, क्योंकि तू चोर-डाकुओं को रोक नहीं सकता। मैं तो मालिक की परम विश्वासु हूं। अत: मुझे सदा खुली रखी जाती है और मैं मालिक को सदा हवा एवं प्रकाश देती हूं।*

कर्म बंधन संबंधित प्रेरक-उपदेशक संदेश:-

प्रभु श्रीआदिनाथ स्वयं ने अपने पिछले जन्म में एक बैल का मुंह बांधने की सलाह दी थी क्योंकि वह खेत की फसल को खा रहा था। खेत के मालिक द्वारा बैल को निर्दयतापूर्वक मारता देख, प्रभु ने करुणावश की यह सलाह दे दी थी ताकि बैल को मार भी नहीं पड़ेगी और किसान को फसल का नुकसान भी नहीं होगा। भूख-प्यास से बिलखता वह बैल 360 पलोपल तक तड़पता रहा, उसे अपार वेदना हुई। प्रभु के सुझाव में करुणा-भाव होते हुए भी अंतराय कर्म का बंध हुआ। इसी कर्म के निवार्णार्थ प्रभुजी को 400 दिन तक भिक्षा में शुद्ध आहार नहीं मिला, यानि उन्हें उपवास में रहना पड़ा। यही से तप के द्वारा अंतराय कर्म-बंधन की मुक्ति का विधान शुरु हुआ। जैन सिद्धांतों के अनुसार कर्म ने किसी राजा-महाराजा, चक्रवर्ती तो क्या तीर्थकरों को भी नहीं छोड़ा। हर व्यक्ति को अपने कर्मो के अच्छे-बूरे परिणामों को भोगना अथवा भुगतना पड़ता है। अधिक जानकारी की जिज्ञासा हो तो गीतार्थ ज्ञानियों से तर्कबद्ध विचार-विमर्श अवश्य करें।

प्रज्ञा और प्रेम

प्रज्ञा का जन्म अहं से नहीं प्रेम से होता है। प्रेम न राग है, न अनुराग है। यह हृदय का परम सहज भाव है। प्रेम आनन्द के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जानता है। प्रेम न तो कष्ट जानता है और न भार। वह तो आनंद-रस का निर्मल निर्झर है। आनंद के अतिरिक्त उसकी अन्य कोई अनुभूति ही नहीं है। भीतर ही खोजिए, प्रेम का परमात्मा वहां सदा उपस्थित है। प्रेम मानव-जीवन की शाश्वत प्रवृत्ति है। प्रेम शून्य को भी पढ़ लेता है। प्रेम को शब्दों में लिखने का प्रयास व्यर्थ है। क्योंकि वह शब्दों में नहीं समाता है। प्रेम निःशब्द है। प्रेम एक सहज नैसर्गिक अनुभूति है, जो निस्सीम है। भूमा है।

वर्ग पहेली क्रमांक-331

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		■	2	■	3		4	5
	■	6				■	7	
8	9	■		■		■	■	
■	10	11		12	■	13		
14	■	15			16		■	
17			■	18			19	■
	■	■	20	■		■	21	22
23	24	■	25				■	
26			■	■		■	27	

बाएं से दाएं:-

1- भगवान महावीर का एक भव--- सार (2)
3- अहमदाबाद का प्राचीन नाम--- (4)
6- नंदावर्त लांछन वाले तीर्थंकर के पिता का नाम--- (4)
7- काम का पर्याय --- (2)
8- उज्जैन के निकट है अभ्युदय--- (2)
10-कावेरी नर्मदा नदी के एक तट पर ओंकारेश्वर व दूसरे तट पर यह जैन तीर्थ है ---कूट (4)
13-छन से जो टूटे कोई सप--- सूना सूना लागे (1,2)
15-केवला देवघना पक्षी विहार राजस्थान में यहां है--- (5)
17-गणधरों द्वारा रचित द्वादशांगी में से एक आ--- (3)
18-वीरमगाम के निकट चंदनवर्णी आदिनाथ प्रभु का तीर्थ उ---(4)
21-भगवान महावीर पर तेजोलेश्या का उपसर्ग करने वाला गोशा---(2)
23- फालना के निकट भ.शांतिनाथ का तीर्थ सांडे--- (2)
25-शत्रुंजय तीर्थ की नगरी--- (4)
26-वेरावल के निकट भरत चक्रवर्ती द्वारा स्थापित चंद्रप्रभु भगवान का तीर्थ चंद्रप्रभाष--- (3)।
27- अड़सठ अक्षर एना जानु अड़सठ तीर्थ सार ''उन अड़सठ तीर्थ की यात्रा का फल इस एक तीर्थ की यात्रा में मिलता है--- वृद्धि पार्श्वनाथ (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-330 का परिणाम

आ	दि	■	न	■	क	ल्या	ण	क
श्वि	■	द	मि	र	म	■	मो	द
न	मा	■	ना	■	ल	■	■	म्ब
■	घ	र	थ	■	■	द्रो	ण	गि
कै	■	वी	■	■	बा	प	■	रि
व	ता	र	■	भ	व	दी	य	■
ल्या	■	■	अ	■	न	■	कु	आ
धा	म	■	म	न	ग	र	■	ग
म	हा	वी	र	■	जा	■	सु	म

ऊपर से नीचे:-

1- नौ प्रकार की भक्ति की प्रक्रिया कहलाती है--- भक्ति है (3)
2- सम्प्रति राजा द्वारा प्रतिष्ठित धार जिले में स्थित भगवान आदिनाथ का तीर्थ --- (5)
3- सुवर्ण, सोना का पर्याय--- (3)
4- णमोकार महामंत्र का दूसरा नाम है न--- र महामंत्र (2)
5- चार गतियों में से एक--- (5)
9- भगवान आदिनाथ ने कराया था असि, --- और कृषि की उपयोगिता का ज्ञान (2)
11-आठ गुणों के धारक होते है सि--- वान (1,2)
12- एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रदर्शित करने वाला भारत शासन का एक कार्यक्रम भा--- र्व (2,1)
13-भगवान नेमिनाथ के दर्शन करने चलो गिर--- त्रा पर चले (2,1)
14-देश के प्रसिद्ध 108 पार्श्वनाथ तीर्थ में से एक पाटण में बिराजे है श्री--- र्श्वनाथ (4,1)
16-भगवान आदिनाथ का केवलज्ञान स्थल (5)
19-पंच परमेष्ठि में सिद्ध भगवान का वर्ण है--- (2)
20- भगवान महावीर का अंतिम चातुर्मास स्थल--- पा पुरी (2)
22-इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ भगवान का लांछन--- (3)
24-भगवान आदिनाथ को इस वृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ था--- वृक्ष (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-331

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

उत्तर का अंतिम उत्तर ''ति'' आना चाहिये।

1- एक फल। 2- शिवाजी महाराज का विशेषण।
3- सत्कार्य करने से चारो और फैलती है।
4- द्वीप-समुद्र के चारो ओर क्या होता है।
5- महादेव अपने शरीर पर लगाते है।
6- कर्मबंध का एक भेद।
7- कर्म की 158 होती है।
8- आयुष्य कर्म क्षय से प्राप्त होनेवाला गुण।
9- भारत का प्रथम नागरिक।
10-कौन सी गति के जीवों के 14 भेद है।
11-आठ मद में से एक।
12-पैदल संघ निकालेवाले को दी जाती उपाधि।

भक्ति, कर्म एवं ज्ञान-योगः- *बचपन से यौवन और यौवन से वार्द्धक्य, जिस प्रकार जीवन का आरोहण क्रम है उसी प्रकार साधना का भी-भक्ति-योग और कर्म-योग से ज्ञान-योग के रुप में ऊर्ध्वमुखी आरोहण क्रम है। एक दृष्टि से भक्ति योग में साधना की कोई विशिष्टता नहीं रहती और अन्तिम ज्ञान-योग की पूर्णता में भी उसकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती, इसलिए कर्म-योग ही साधना का मुख्य केन्द्र रहता है। किन्तु, हमें एक बात भूल नहीं जानी है कि हमें कर्म-योग में भक्ति योग तथा ज्ञान-योग का उचित सहारा लेना पड़ता है। इसलिए साधना-स्वरुप केन्द्र पर स्थित होकर हमें भक्ति एवं ज्ञान का आश्रय लेकर चलना पड़ता है। रुपक की भाषा में-भक्ति हमारा हृदय है, ज्ञान हमारा मस्तिष्क है और शरीर, हाथ-पैर आदि कर्म है। तीनों का सुन्दर समन्वय ही सम्यक्-साधना का आधार है।*

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-12-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्गपहेली क्रमांक-330 के परिणाम

विजेताः-

1- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) -प्रथम
2- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) -द्वितीय
3- श्रीमती सरोज तलेरा, इन्दौर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-330 के परिणाम

विजेताः-

1- सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) -द्वितीय
3- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1-कनक, 2- मलम, 3- पापा, 4- डालडा, 5- शीशी, 6- चाचा, काका, 7- टाटा, 8- भाभा, 9- चाचा, 10-सो-सो, 11-बाबा, 12-नामना, 13- नवीन।

मन का दर्पणः- मन के दर्पण को साफ कीजिए, तभी उसमें आपका प्रतिबिम्ब साफ-साफ दिखेगा। सुखानुभूति के लिए सुख के बीज बोना जरुरी है। बीज बोने का स्थान शरीर का ऊपर दिखाई देने वाला हिस्सा नहीं है, वह तो भीतर है। सुख की अनुभूतियों का फव्वारा वही होता है। उसका रिमोट कन्ट्रोल वहीं है। नेक काम करना तो दूर की बात है आप मन में नेक विचार लाकर तो देखिए, सुख की अनुभूतियों में आप अपने आप डुबकी लगाते नजर आएंगे। मीरा की तरह एक बार प्रेम का रस चख लेने के बाद आप प्रेममय ही हो जाएंगे। आप पर दूसरा रंग चढ़ही नहीं सकेगा। आपका पूरा शरीर दर्पण बन जाएगा। चारों ओर आभा ही आभा होगी।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

सागर समुदाय 2023 चार्तुमास..!

✻ संघ स्थविर, सुविशाल गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा, पूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री चंद्ररत्नसागर सूरीजी म.सा., पू.आ.श्री मुक्तिसागर सूरीजी म.सा., पू.पं. श्री अचलमुक्तिसागरजी म.सा.,पू.पं. श्री विरागसागरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री जयचंद्रसागरजी म.सा. आदि 150 का चार्तुमास कोडवा-पूना (महा.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री विवेकचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नागेश्वर महातीर्थ, नागेश्वर, उन्हेल (राज.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री हेमचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.पं.श्री विरागचंद्रसागरजी म.सा. आदि 100 का चार्तुमास पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री चंद्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास मुंबई क्षेत्र में होगा।

✻ पू.आ.श्री चंद्रशेखारसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि पादलिप्तपुरम् पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री सागरचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.गणिवर्य श्री तीर्थचंद्रसागरजी म.सा. पू.गणिवर्य श्री मोक्षचन्द्रसागरजी म.सा. आदि बाबुलनाथ,वालकेश्वर, मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री नयचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनिवर श्री अजितचंदसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास भायकला-मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री पूर्णचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री संभवचंद्रसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास दादा साहेब, भावनगर (गुज.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री अक्षयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनिवर श्री नयशेखारसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास भायंदर- मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पू.आ. श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास कुरार विलेज, कादिंवली ईस्ट, मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पू.आ.श्री मतिचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नयापुरा, उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ पू. आ.श्री गुणचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास बोटाई में होगा।

✻ पू.पंन्यास श्री लब्धिचंद सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास आगम मंदिर, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पू.पंन्यास श्री प्रसन्नचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नीमच (म.प्र.) में होगा।

✻ पू.पंन्यास श्री अपूर्वचंद्र सागरजी म.सा., पू. गणिवर श्री रम्यचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

✻ पू. गणिवर्य श्री दर्शनचंद्र सागर जी म.सा. आदि का चार्तुमास सायवशे, अहमदाबाद क्षेत्र (गुज.) में होगा।

✻ पू. गणिवर्य श्री आगमचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास लुणावडा में होगा।

✻ पू. गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास रेसक्रास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

✻ पू.गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री अक्षत-रत्नसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास भवानीमंडी (राज.) में होगा।

✻ पू.मुनिवर श्री सुधर्मसागरजी म.सा.का चार्तुमास जानपुर, अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पू.मुनिवर श्री सुमतिसागरजी म.सा. का चार्तुमास पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पू. मुनिवर श्री दीपरत्न सागर जी म.सा. का चार्तुमास पार्श्व-विहार, जामनगर (गुज.) में होगा।

✻ पू. मुनिवर श्री कुलरत्न सागर जी म.सा. का चार्तुमास गोपीपुरा सूरत (गुज.) में होगा।

✻प्रर्वतक पू.मुनिवर श्री देवप्रभ सागरजी म.सा. पू.मुनिवर श्री विनीत सागरजी म.सा., पू. मुनिवर श्री विनम्र सागरजी म.सा.आदि का चार्तुमास मुंबई क्षेत्र (महा.) में होगा।

✻ पू. मुनिवर श्री कल्पचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास सूरत क्षेत्र(गुज.) में होगा।

✻ पू. मुनिवर श्री अभिनंदनचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नरसापुर (आं.प्र.) में होगा।

✻ पू.मुनिवर श्री सिद्धचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास राजस्थान में होगा।

✻ पू. मुनिवर श्री निपुणचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास सेवाडी-राजस्थान में होगा।

✻ हे कर्म, मैं तुझे निश्चय पूर्वक आज्ञा करता हूं कि मेरे पैरों नीति और नेकी न ठुकरायें।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

ऋषभ और सिद्ध की प्राप्ति के साथ मुंबई की धर्माराधना यादगार बनी

मुमुक्षु श्री संजय और नीतेश संघवी ने सागर श्रमण समुदाय को गौरांवित किया

✻ नीतेशभाई श्री सिद्धरत्नसागर और संजयभाई श्री ऋषभरत्न सागर के रुप में नवरत्न गुरुकुल में सम्मिलित हुए। ✻ 19 से 23 जनवरी को श्री सिद्धाचल छ:रि पालित संघ। ✻ चार्तुमास बाद गुजरात-राजस्थान-मध्यप्रदेश में अनेक शासन प्रभावक कार्य होंगे। ✻ 23 नवंबर को उपधान तपस्वीयो का वर्षीदान वरधोडा 24 नवंबर को माल एवं महामांगलिक हुई। ✻ गुरु मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतापगढ़ में होगा। ✻ पालीताना में एक ओर धर्मशाला बनेगी।

मुंबई- गोरेगांव श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु की छत्राछाया में आयोजित 2022 का चार्तुमास अनेक विध शासन प्रभावक कार्यों से वर्षो तक यादगार बना रहेगा। धर्मरुपी अनेक माईल स्टोन की स्थापना करने वाला यह चार्तुमास जिनशासन की जयवंता का प्रतीक बन गया है। अनेक शासन प्रभावक कार्यो के द्वारा पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा.एवं युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्रीउज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्री,प.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागर जी म. सा.मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में कई धर्मोत्थान करने वाले शासन प्रभावक कार्यो की अनवरत श्रृंखला चार्तुमास में बन गई थी। तप-जप अनुष्ठान, मांगलिक उपधान और दीक्षा जैसे धर्म कार्यो से इस चार्तुमास ने मायानगरी में धर्म का शंखनाद कर दिया था। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी ने पाट परम्परा का निर्वाह करते हुए 24 नवंबर कों महामांगलिक के द्वारा जनमानस को अमृत आर्शीवाद सौंपा चार्तुमास परिवर्तन के साथ ही दो मुमुक्षु भाई श्री संजय कोठीफोड़ा एवं नीलेश संघवी का प्रवज्या महोत्सव हुआ। आप दोनों श्रमण पंथगामी दीक्षार्थियों को दीक्षा मुर्हूत 26 सितंबर को दिये गये थे। दोनों मुमुक्षु की दीक्षा क्रिया विधि दिनांक 13 नवंबर को भव्य दीक्षा महोत्सव प्रांगण में शुभलग्न से आरंभ होकर पूज्यश्री के द्वारा शुभ मुर्हूत के अनुसार रजोहरण प्रदान किया गया। दीक्षा महोत्सव दिनांक 11 से 13 नवंबर तक हुआ। दिनांक 11 नवंबर को जंबुकुमार चारित्रा पर वैराग्य नाटिका कर आयोजन रखा गया था। दिनांक 12 नवंबर को भव्य वर्षीदान वरघोड़ा अंतिम पारणा और बिदाई समारोह हुआ। इस प्रवज्या महोत्सव के बाद श्रावक से श्रमण बननके साथ ही तपाराधना उपधान का चरम चरण उपस्थित हो गया। तप-जप अनुष्ठान और सामाजिक कार्यो के द्वारा इस चार्तुमास नई छाप मुंबई में छोड़ी है। युवा जैनाचार्यश्री की निश्रा में श्रावक में श्रमण की ओर आगे ले जानेवाली तपाराधना में दिनांक 24 नवंबर को तपस्वीयों को माला रोपण का भव्य महोत्सव का आयोजन हुआ। दीक्षा और उपधान तप महोत्सव में मुंबई में विराजित पूज्य सागर गच्छाधिपति के साथ सभी पूज्य गुरु भगवंतो को आमंत्रित किया गयाथा यह सब आयोजन सम्पन्न होने के साथ ही साधु चलता भला के अनुसार आपके गुरुकुल का विहार पूना की ओर हुआ।

परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा. आगामी संभावित आयोजन:-

❋ 225 मुमुक्षओं का सम्मान समारोह 20-21 नवंबर को हुआ।
❋ मुंबई महानगर से पूज्य गुरुदेव का विहार गुजरात की ओर से।
❋ श्री शंखेश्वर महातीर्थ की यात्रा।
❋ श्री शंखेश्वर से पालीताना की ओर विहार।
❋ पालीताना महातीर्थ में 5 दिवसीय छःरिपालित संघ- 19 जनवरी 2023 तक।
❋ 22 जनवरी को पालीताना महातीर्थ में नवरत्नधाम में महामांगलिक।
❋ पालीताना महातीर्थ से मध्यप्रदेश की ओर विहार यात्रा।
❋ शिवगढ़ नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव-22 फरवरी 2023।
❋ तनोड़िया नगर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- 3 मार्च 2023।
❋ प्रतापगढ़ नगर में परम पूज्य आचार्यदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. का 80 वां जन्म महोत्सव- दिनांक 10 मार्च 2023।
❋ प्रतापगढ़ नगर में पोरवालो का मंदिर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 12 मार्च 2023।
❋ सूर्यनगरी जोधपुर के समीप स्थित 109 पार्श्वचंदन प्रभावती मंदिर में 109 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं की भव्य अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 3 मई 2023।
❋ हाड़ौति क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय धर्मानुरागी राजस्थान केबिनेट मिनिस्टर श्री प्रमोद जैन भाया के द्वारा बारा नगर में निर्मित भव्य जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा अंजनशलाका महोत्सव में निश्रा उपस्थिति- दिनांक 23 मई 2023।
❋ पूना महानगर के मुकुंदनगर स्थित नवकार सुयोग अपार्टमेंट में जिनालय का शिलास्थापना।
❋ श्री पालीताना महातीर्थ में नवनिर्मित नवरत्नधाम के सामने केशरियाजी के पास स्थित विशाल भूखाण्ड पर भव्य धर्मशाला निर्माण हेतु भूमि पूजन 29 जनवरी 2023, रविवार।

तपागच्छाधिपति एवं संघ स्थविरश्री के दीक्षा तिथि पर गुणकीर्तन उत्सव

❋ स्थानक संघ के द्वारा पूज्यपादश्री को ''संघऊर्जा तीर्थ'' की उपाधि दी गई। ❋ सागर श्रमण-श्रमणी के चार्तुमास की भव्य उद्घोषणा हुई।

मुंबई- पूज्य गोतार्थ श्रेष्ठ गच्छ नायक आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीजी महाराजा प्रभावपूंज गच्छाधिपति श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा, प्रशांत मूर्ति आचार्यदेव श्री राजेन्द्रसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से भारतभर के हजारों से भी अधिक श्री संघों में सभी गच्छाधिपति, 200 से अधिक आचार्य भगवंतों और हजारों साधु-साध्वीजी की निश्रा में चरम तीर्थकर परमात्मा प्रभुवीर के दीक्षा कल्याणक कार्तिक वदी-10 दिनांक 10 नवंबर को भव्य गुणकीर्तन उत्सव सभा का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम पूर्ण रुप से पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्रीश्री मनोहर कीर्ति सूरी जी महाराजा और संघ स्थिवरश्रमण परम्परा संवाहक संघवत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्यधार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा की दीक्षा तिथि पर हुआ। पूज्यश्री की 84 वीं दीक्षा तिथि के इस प्रसंग पर मुंबई से श्री स्थानक जैन संघ के द्वारा पूज्यश्री को ''संघ ऊर्जा तीर्थ'' की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी दिन सागर समुदाय के आगामी 2023 चार्तुमास की उद्घोषणा भी की गई।

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा के चढ़ावे हुवे पौष दशमी पर अट्ठम तपाराधना होगी

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में प्रतिष्ठा के चढ़ावे दिनांक 6 नवंबर को हुए इसके उपरांत दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक पौष दशमी आराधना पर अट्ठम तप का आयोजन होगा तथा अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अचतमुक्ति सागरजी म.सा. को आचार्य पदवी पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है।

बागड़ नरेशाचार्यश्री की निश्रा में श्री सिद्धाचल महातीर्थ के चार छ:रिपालित संघ का आयोजन

पालीताना- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पवित्ररत्न सागर जी म.सा. मुनिश्री नमिरत्नसागरजी म.सा., श्री गंभीररत्न सागरजी म.सा., श्री पद्मरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में हाड़ेचा भवन पालीताना में आपश्री की निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ मंगल प्रथम प्रवेश दिनांक 27 अक्टूबर को द्वितीय प्रवेश दिनांक 29 अक्टूबर को हुआ। उपधान तप के तपस्वियों की भव्य शोभायात्रा दिनांक 13 दिसंबर को आयोजित की गई है। मालारोपण विधि दिनांक 14 दिसंबर को होगी। चार्तुमास एवं उपधान तप के संपूर्ण लाभार्थी प्रेमलता बहन जयंतीलाल, प्रयास गांधी परिवार तलवाड़ावाले है।

आपकी निश्रा में श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ चन्द्रकांत प्रेमिला बहन कपिल सेठ परिवार के द्वारा आयोजित होगा। श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ से संघ का प्रयाण दिनांक 26 दिसंबर को होगा एवं माल दादा के दरबार में दिनांक 30 दिसंबर को होगी। दूसरा संघ 6 जनवरी 2023 से सोनगढ़ से पालीताना छःरि पालित संघ तीसरा छःरि पालित संघ सोनगढ़ से **श्री सिद्धाचल का श्री प्रकाशचंद्रजी राजमलजी मेहता परिवार, सैलानावाले के द्वारा दिनांक 27 से 30 जनवरी 2023 तक आयोजित किया गया है।** 9 अक्टूबर को मुनिश्री गंभीर रत्नसागर जी म.सा. को श्रेणी तप की पूर्णाहुति पारणा होगा। संघ में पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भी सानिध्य रहेगा।

✲ परमार्थ पर प्रीति होने के लिए सत्संग एक सर्वोत्कृष्ठ और अनुपम साधन है।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्म क्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को है। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय तीर्थ

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री कुमुदचंदसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में अयोध्यापुरम् तीर्थ से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन मण्डलेचा परिवार धार के द्वारा हो रहा है। संघ प्रयाण 4 जनवरी को होगा। पालीताना प्रवेश 8 जनवरी तथा 9 जनवरी को दादा के दरबार में माल होगी।

उवसग्गहरं तीर्थ में अट्ठम तपाराधना होगी

उवसग्गहरं तीर्थ- परमात्मा श्री पार्श्वप्रभु के जन्मदीक्षा कल्याणक पर यहां अट्ठम तप की आराधना का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 16 दिसंबर को अट्ठम तपस्वीयों का उत्तर पारणा दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक तपाराधना होगी। इस अवसर पर कलश यात्रा महापूजन पढ़ाई जायेगी, प्रभु जन्मोत्सव पर चौदह स्वप्न का अवतरण भक्ति आरती होगी। दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोड़ा महापूजन होगी एवं तपस्वीयों का बहुमान होगा।

गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी का चार्तुमास भवानीमंडी (राज.) में होने की संभावना

✻ मुनि श्री अक्षतरत्नसागरजी म.सा. को गणि पदवी प्रदान होगी।

उदयपुर- आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास भवानीमंडी (राज.) में होने की संभावना है। श्री भवानीमंडी श्री संघ ने विगत दिनों उदयपुर पहुंचकर पूज्यश्री से विगत अनेक वर्षो से की जा रही विनंती को ध्यान में रखते हुए भवानीमंडी में आगामी चार्तुमास के लिये जोरदार आग्रह किया। आपने श्री संघ की विनंती को ध्यान से सुनकर शीघ्र ही निर्णय लेने के बारे में बतलाया है इससे श्री संघ को पूरी उम्मीद जाग्रत हो गई है कि गणिवर्यश्री का आगामी चार्तुमास भवानीमंडी में होगा। पूज्य मुनिपुंगश्री अक्षत रत्नसागरजी म.सा. को गणि पदवी के लिये सागर गच्छाधिपति की ओर से स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।गणि पदवी अनुकुलता से चार्तुमास के उपरांत होगी।

मालवा के जैनाचार्यश्री की निश्रा में उपधान माल महोत्सव मना

पालीताना-पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्न सागरसूरी जी,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में यहां वाव धर्मशाला में श्री जिनतीर्थरत्ना शत्रुंजय उपधान तप समिति के तत्वावधान में उपधान तप के तपस्वीयों के मालारोपण महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 23 नवंबर को रात्री में भक्ति के साथ माला के चढ़ावे सम्पन्न हुए। दिनांक 24 नवंबर को प्रातः मालारोपण महोत्सव के आयोजन में तपस्वियों को उपधान तप की माल पहनाई गई।

जैनाचार्य श्री रत्नचंद्रसूरीजी म.सा. के सूरी पद रजत वर्ष के अवसर पर विविध आयोजन

सूरत- पूज्य प्रभावक आचार्य भगवंत श्री रत्नचंद्रसूरीजी म.सा. के सूरी पद रजत वर्ष में अनेक शासन प्रभावक आयोजन होने जा रहे है। सूरत वेसु में चार्तुमास के उपरांत पूज्यश्री बड़ोदा पधारेंगे। यहां अलकापुरी में रजत वर्ष पर आपश्री का भव्य मंगल प्रवेश सूरी रजत वर्ष की घोषणा के साथ मुनिश्री राजदर्शनविजयजी को गणिपद की घोषणा के बाद आपका विहार पालीताना की ओर होगा। यहां आपश्री की निश्रा मेंसोनगढ़से पालीताना का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन 28 दिसंबर से 1 जनवरी 2023 तक होगा इसके बाद मुमुक्षु हीर (15) की भगवती दीक्षा 18 जनवरी तथा मुमुक्षु विरेन बोहरा (12) की दीक्षा 3 फरवरी को अहमदाबाद में होगी। चैत्र ओली सुमेरु तीर्थ पर होगी। आपश्री का आगामी चार्तुमास नवसारी श्री संघ में होगा।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- श्री कलापूर्ण जैन आराधक मंडल के संयोजन में केशरवाड़ी में श्रावक से श्रमण बनने की धार्मिक क्रिया उपधान का आयोजन होने जा रहा है।पू. आचार्यश्री उदयप्रभ सूरीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होनेवाले उपधान का प्रथम मुर्हूत 18 दिसंबर को है, द्वितीय मुर्हूत 20 दिसंबर को तथा मोक्षमाला रोपण 5 फरवरी 2023 को होगा।

गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा

गिरनार- तपोवन के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा., पंन्यास श्री विजय पद्मदर्शन म.सा. एवं मुनिश्री दिव्यपद्म विजयजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा होने जा रही है। पूज्यश्री का प्रवेश 9 नवंबर को होगा एवं नव्वाणुं यात्रा 10 नवंबर से आरंभ होगी।

श्री सिद्धाचल गिरिराज की 99 यात्रा

मुंबई- श्री संभव जिन भक्ति ग्रुप कांदिवली के द्वारा श्री सिद्धाचल गिरिराज की 99 यात्रा का आयोजन दिनांक 8 नवंबर से होने जा रहा है। यात्रा की पूर्णाहुति 25 दिसंबर को होगी। शासन सम्राट आचार्य श्री नेमी-सूरीजी महाराजा के समुदाय की आचार्य श्री निर्मलचन्द्रसूरीजी एवं आचार्य श्री जिनेशचंद्र सूरीजी, साध्वी श्री जिनेन्द्र श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन होगा। मेवाड़ भवन पालीताना से यात्रा संचालित होगी।

✻ शास्त्र आदि के ज्ञान से अंत नहीं आता, परन्तु अनुभव ज्ञान से अंत आता है।

जैनाचार्य श्री रवि-ललितसूरीजी की निश्रा में गढ़सिवाना में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव

✻ उपधान संघ आयोजन भी।

गढ़सिवाना- पूज्य आचार्य श्री रवि शेखर सूरीजी म.सा. एवं श्री ललित शेखर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत आदि ठाणा की निश्रा में में गढ़सिवाना में श्री आदिनाथ प्रभु आदि जिनबिंब का प्रतिष्ठा महोत्सव 25 से 30 नवंबर तक मनाया गया। 25 नवंबर को पूज्यश्री के मंगल प्रवेश के साथ महोत्सव आरंभ हुआ। विविध पूजन-महापूजन के साथ परमात्मा के पंच कल्याणक की प्रस्तुति भी हुई। जन्म कल्याणक पर 28 नवंबर को 18 अभिषेक का आयोजन किया गया। दिनांक 29 नवंबर को दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोड़ा निकला। 30 नवंबर को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

त्रिपुटी बंधु के चार्तुमास पर धर्मिष्ठों ने अपनी यादों को शब्दों और आंसुओं के साथ बयान किया

✻ गोवा में प्रतिष्ठा 4 दिसंबर को सम्पन्न।

मुबंई- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व- अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वीवृंद निश्रा में चार्तुमास परिवर्तन के पूर्व दिनांक 5 नवंबर को चार्तुमास के चार माह में हुए आयोजन प्रवचन आदि कार्यक्रम के बारे में अपनी यादों को धार्मिष्ठों ने शब्दों और आंसुओं के साथ बयान कर लोगों के हृदय को द्रवित कर दिया और धर्म के प्रति आस्था और विश्वास के साथ गुरु भगवंतों के प्रति आदर का भाव सबने व्यक्त किया।

सिंकदराबाद में प्रतिष्ठा एवं सागरभाई की भगवती प्रवज्या महोत्सव मना

सिंकदराबाद- श्री गुजराती एवं राजस्थानी जैन संघ के संयुक्त तत्वावधान में गृह मंदिर की प्रतिष्ठा एवं सागरभाई मुमुक्षु की भगवती प्रवज्या का महोत्सव नवंबर के अंतिम सप्ताह में यहां सम्पन्न हुआ। पूज्य जैनाचार्य श्री जिनसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में यह आयोजन 28 से 30 नवंबर के मध्य सम्पन्न हुआ। दिनांक 28 नवंबर को मुमुक्षु का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। शाम को बिदाई समारोह मनाया गया। दिनांक 29 नवंबर को अष्टोत्तरी महाभिषेक हुए साथ ही मातृ-पित् वंदना का आयोजन किया गया। दिनांक 9 नवंबर को गृह मंदिर में पूज्यश्री की प्रतिष्ठा सम्पन्न करने के बाद मुमुक्षु सागरभाई की भगवती प्रवज्या शुभ लग्नांश वेला में प्रारंभ हुई। 1 दिसंबर को द्वारोद्घाटन एवं नूतन मुनिश्री के पगलिये हुए।

रायथल में प्रतिष्ठा सम्पन्न

रायथल- जालोट जिले के रायथल में भी सुमतिनाथ प्रभु के नवनिर्मित जिनालय प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 24 से 26 नवंबर तक सम्पन्न हुआ। महोत्सव का आयोजन पूज्य आचार्य श्री रवि शेखर सूरीजी म.सा. एवं श्री ललित शेखर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में हुआ। दिनांक 24 नवंबर को गुरुदेव के मंगल प्रवेश के साथ उपाश्रय का उद्घाटन और 18 अभिषेक हुए। 25 नवंबर को विविध पूजन के साथ 26 नवंबर को शुभ वेला में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। 27 को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

रांका परिवार ने छ:रि पालित संघ निकाला

सोनगढ़-सोनगढ़ से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ सौ. सुमनदेवी रांका परिवार के द्वारा जैनाचार्य श्री जितरत्नसागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित हुआ। संघ की प्रेरणा साध्वीवृदा मातृ हृदय श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. थे। दिनांक 13 से 14 नवंबर तक संघ का आयोजन तथा 16 नवंबर को दादा के दरबार में माला रोपण हुआ। शुजालपुर में भी आयोजन के अंतर्गत मुमुक्षु संयमी तिलगोता नलखोड़ा का वरघोड़ा आयोजित किया गया।

✻ जगत में अच्छा दिखवाने के लिए मुमुक्षु जीव कोई प्रवृत्ति न करें, परन्तु जो अच्छा है उसी का आचरण करें।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान ओज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

पौष दशमी पर 600 आराधक अट्ठम तप वचनसिद्ध जैनाचार्य की निश्रा में करेंगे

शंखेश्वर- सागर समुदाय के वरिष्ठजैनाचार्य भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठा चार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. 97 ओलीजी आराधक मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म. सा. के साथ साध्वी श्री आत्मप्रज्ञा श्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री भद्रगुप्ता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की निश्रा में भव्य रुप से परमात्मा श्री अजितनाथ प्रभु, श्री गोड़ी पार्श्वनाथ एवं श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु की छत्रछाया में अट्ठम तपाराधना में 600 से अधिक तपस्वियों के जुड़ने की संभावना है। परमात्मा प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा के जन्म दीक्षा कल्याणक पर दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक यह आराधना वाव (गुज.) में होगी। श्रीमती पुष्पा बहन प्रभुलाल दुदाचंद कुलड़िया परिवार, वाव ने इस आराधना का लाभ लिया है।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ छ:रिपालित संघ निकलेगा

✻ दोषी परिवार लाभार्थी है।

दिल्ली- श्री प्रेमभुवनभान सूरी समुदायवर्तीय आचार्य भगवंत श्री गुण रत्नसूरीजी महाराज के सुशिष्य आचार्य देवश्री विजय रश्मिरत्न सूरीजी म.सा., मुनि श्री भव्यरत्नविजय जी म.सा. आदि ठाणा आप साबरमती अहमदाबाद में चार्तुमास आराधना के लिये विराजमान है, आपश्री की निश्रा में श्रीमती असुबहन रमनाथमलजी समरथमलजी दोषी परिवार दिल्ली के द्वारा भव्य छःरि पालित यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। संघ, दादा के दरबार से दादा के दरबार के लिये प्रस्थान करेगा। श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताना से संघ का प्रस्थान दिनांक 18 जनवरी 2023 को होगा और मालरोपण दिनांक 31 जनवरी को होगी।

श्री नागेश्वर तीर्थोद्धारक पंन्यास श्री अभयसागरजी म.सा. की 30 वीं पुण्य तिथि पर गुणानुवाद सभा हुई

नागेश्वर- पूज्य पंन्यास श्री अपूर्व चंदसागरजी म.सा., गणिवर्य श्री रम्यचंद सागरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में यहां पर पूज्यपाद तीर्थोद्धारक पंन्यास प्रवर श्री अभय सागरजी म.सा. की 36 वीं पुण्यतिथि पर भव्य गुणानुवाद का आयोजन दिनांक 19 नवंबर को किया गया। पूज्य गुरु भगवंतों के साथ अन्य वक्ताओं ने पूज्यश्री को स्मरण करते हुए आपके अविस्मरणीय संस्मरण सुनाये।

भीवड़ी में उपधान तप

भीवड़ी - ओसवाल पार्क में पूज्य आचार्य भगवंत श्री यशोरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनाने वाली आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम प्रवेश दिनांक 29 नवंबर तथा द्वितीय प्रवेश दिनांक1 दिसंबर को हुवा। उपधान तप की माल 18 जनवरी 2023 को होगी।

श्री चंवलेश्वर तीर्थ में अट्ठम तपाराधना

चैनपुरा- भीलवाड़ा जिले में स्थित प्राचीन तीर्थ श्रीचंवलेश्वर पार्श्वनाथ में श्री पार्श्वप्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर दिनांक 16 से 20 दिसंबर तक अट्ठम तपोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्य प्रवर्तक प्रवर श्री कलापूर्ण विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में आयोजित महोत्सव में 16 दिसंबर को तपस्वी का उत्तर पारणा दिनांक 17 से 19 तक अट्ठम तप महोत्सव जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा तथा 20 दिसंबर को तपस्वियों के पारणा और बहुमान कार्यक्रम के मार्गदर्शक प्रेरक अंतराष्ट्रीय जैन विधि कारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

श्रीसिद्धाचल की 99 यात्रा

मुंबई- श्रीमद् विजय नेमीसूरीजी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री सोम सुन्दरसूरीजी म.सा.आदि साधु साध्वी वृंद की अमृत निश्रा में सिद्धाचल गिरिराज की 99 यात्रा का आयोजन श्रीमती मोहित बहन रतनचंद चौहान परिवार के द्वारा किया जा रहा है। 99 यात्रा का शुभारंभ दिनांक 8 नवंबर को होगा। मालारोपण बहुमान 12 दिसंबर 2022 को किया जायेगा। यात्रा की पूर्णाहुति 17 दिसंबर को होगी।

हुबली में प्रतिष्ठा

पूज्य आचार्य भगवंत श्री अजीत शेखर सूरीजी म.सा. ने नवनिर्मित श्री शांतिनाथ जिन मंदिर की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये महासुद-13 दिनांक 3-2-2023 का मंगल मुर्हूत प्रदान किया।

श्री शंखेश्वरपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव में सागर गच्छाधिपति के साथ अनेक जैनाचार्यों की निश्रा में होगी

✻ 9 दिसंबर को ईको साईन्स प्रदर्शन।

✻9 दिसंबर को साईन्स प्रौजेक्ट लांज-बीना बहन की दीक्षा

पालीताना- श्री सिद्धाचल महातीर्थ के समीप बने श्री शंखेश्वरपुरम् तीर्थ में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन पूज्यपाद गच्छाधिपति संघ स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के साथ अनेक साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में होगी, लगभग 400 साधु-साध्वी भगवंतों की उपस्थिति का अनुमान है। दिनांक 8 से 12 दिसंबर 2022 तक यह आयोजन होगा। भव्य पंचकल्याण स्टेच कार्यक्रम का आयोजन होगा। च्वयन

निश्रा प्रदाता गुरु भगवंत

प.पू.आचार्य श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा., ''लघु त्रिपुटी'' प. पू. आ.श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म. सा., प.पू.आ.श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी म.सा., प.पू.आ.श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी म.सा., प.पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा., प.पू.आ.श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा., प.पू.आ. श्री चंद्र रत्न सागर सूरीजी म.सा., प.पू. आ.श्री सागरचंद्रसागरसूरीजी म.सा. प.पू. आ.श्री नयचंद्रसागर सूरीजी म.सा. प.पू.आ.श्री पूर्णचंद्रसागर सूरीजी म.सा. प.पू.आ.श्री अक्षयचंद्रसागर सूरीजी म.सा., प.पू.आ.श्री मतिचंद्रसागर सूरी जी म.सा., प.पू.आ.श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी म.सा.,पू.पंन्यास श्री लब्धिचंद्र सागरजी म.सा., प.पंन्यास श्री दिव्येशचंद्र सागरजी म.सा.

आदि कार्यक्रम के साथ दीक्षा भी होगी। दिनांक 11 दिसंबर को अनेक वैज्ञानिकों की उपस्थिति में साईन्स प्रोजेक्ट का शुभारंभ होगा। दिनांक 12 दिसंबर को अंजन प्रतिष्ठा के साथ संघपति की संघमाल भी होगी। दिनांक 13 दिसंबर को सभी गुरु भगवंतों का प्रवेश पालीताना में होगा। यह श्री सिद्धाचल की भावयात्रा के साथ पारणा भवन 36 संगीतकारों के द्वारा गिरिराज की भक्ति का आयोजन होगा। दिनांक 14 दिसंबर को मेरुगिरी महोत्सव के अंतर्गत सभी पगलिया (सीढ़ियों) का पूजन किया जायेगा।

श्री कल्पकुमार दीक्षित होंगे

पालीताना-पू. आ.श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म. सा., प.पू.आ.श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी म.सा., प. पू. आ.श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी म.सा. ,आचार्यश्री नयचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में बोरडीया चौहान परिवार के कुलदीपक श्री कल्पकुमार (12 वर्ष) दीक्षित होकर प्रभुवीर के पंथानुगामी बनेंगे। दिनांक 14 दिसंबर को आपकी भगवती प्रवज्या कल्याण भवन पालीताना में शुभ मंगल मुर्हूत में सम्पन्न होगी। आप अपना संयम जीवन पूज्य आचार्यश्री नयचंद्रसागर सूरीजी म.सा. के सानिध्य में व्यतीत कर परिवार को गौरांवित करेंगे।

शासन प्रभावक सागर जैनाचार्य श्री हर्षसागर सूरीजी का जन्मोत्सव भव्य रुप से मनाया गया

मुंबई- आगमोद्धारक विदली वाटिका विलेपार्ले में श्रमण परम्परा संवाहक संघवत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्यधार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजी पूज्य आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में शासन प्रभावक जैनाचार्य प्राचीन तीर्थोनायक श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराजा का 62 वां जन्म दिन उत्साहपूर्वक दिनांक 14/11/2022 को भव्य रुप से मनाया गया, अनेक वक्ताओं ने अपने उद्बोधन दिये। इस प्रसंग पर संघ स्थिवर आचार्यश्री को सम्मान में प्रकाशित ''संघ स्थिवर सत्कार'' नामक पत्रिका का विमोचन भी सम्पन्न हुआ। पत्रिका में पूज्यश्री से संबंधित अनेक आदि स्मरणीय फोटो, आलेख का समावेश किया गया है।

✻ अनुकूलता में अनासक्ति की और प्रतिकूलता में समता की परीक्षा होती है।

भोपावर-तृतीय ध्वजारोहण वर्षगांठ एवं महामांगलिक का आयोजन

भोपावर- 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। दो वर्ष पूर्व फाल्गुन सुदी-3 को भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। मोन्टेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा के नेतृत्व में यादगार महोत्सव का आयोजन आज भी धर्मिष्ठों को याद आता है। महातीर्थ का तृतीय ध्वजारोहण महोत्सव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की पावन निश्रा में फागुन सुदी-2 दिनांक 21फरवरी को पूज्यश्री महामांगलिक एवं फागुन सुदी-3 दिनांक 22 फरवरी को श्री शांतिनाथ प्रभु के भव्य जिनालय एवं गुरु मंदिर पर ध्वजारोहण सम्पन्न होगा।सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई जायेगी। चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी है। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई जावेगी। श्री रमणभाई, श्री हितेशभाई आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा।

जैनाचार्यश्री जिनोत्तमसूरीजी के संयमचर्या के 50 एवं आचार्य पदवी के 25 वर्ष पूर्ण होने पर महोत्सव

पालीताना- पूज्य नेमीसूरी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री सुशील सूरीजी म.सा. के सुशिष्य जैनाचार्य श्री सुशीलसूरीजी म.सा. के संयम जीवन के 50 वर्ष तथा आचार्य पदवी के 25 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण महोत्सव का आयोजन 20 से 24 नवंबर तक आयोजित होगा इसके अंतर्गत दिनांक 20 नवंबर को 51 छोड़ के साथ उजमणा एवं आर्ट गैलरी बनाई जायेगी इसका उद्घाटन और श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव पूजन पढ़ाई जायेगी। 21 नवंबर को श्री शंखेश्वर महातीर्थ की भावयात्रा कराई जायेगी। दिनांक 22 नवंबर को 51 मंगल कलश के साथ भव्य सामैय्या एवं गुरु गुणानुवाद सभा होगी। दिनांक 23 नवंबर को संयम उपकरण वंदनावली उपधान तप के लाभार्थी का बहुमान मोक्षमाल का वरघोड़ा गांव सांझी तथा तलेटी पर महापूजन होगी। उपधान तप दिनांक 6 अक्टूबर को आरंभ होगी एवं उपधान माल दिनांक 24 नवंबर को होगी। उपधान समदड़ी भवन में होगा।

आपकी निश्रा में दिनांक 25 नवंबर को श्री ॐ शांति भवन में चांदी की श्री चंद्रप्रभु श्री गौतमस्वामीजी, श्री शांति सूरीजी म.सा. की प्रतिमा का निर्माण किया गया। इसी दिन जिन मंदिर का खात मुर्हूत भी हुआ। प्रेरणा मार्गदर्शक के रुप में अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण उपस्थित थे।

आचारांग सूत्र के जोग पूर्ण

पालीताना- वाणी के जादूगर आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. के आचारांग सूत्र के 58 दिवसीय जोग की क्रिया दिनांक 21-11-2022 को पूर्ण हुई।

श्री वही पार्श्वनाथ तीर्थ में अट्ठम तप

मंदसौर-पूज्य साध्वी श्री मुक्ति-निलया श्रीजी म.सा., श्री शांतिपद्मा श्रीजी म.सा.और श्री भक्तिनिलया श्रीजी म.सा. की निश्रा में यहां प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम तप का आयोजन होने जा रहा है। 16 दिसंबर को धारणा 17-19 दिसंबर तक तेला और 20 दिसंबर को पारणा होगा। श्री चन्द्रशेखर कंकरेचा देवास ने लाभ लिया है।

अट्ठम तपाराधना

घासोई-पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा स्थापित तीर्थ घासोई में अट्ठम तपाराधना का आयोजन मुनिश्री सिद्धेशचंद्रसागर एवं मुनि श्री सिद्धचंद सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में मनाया जायेगा। इस पावन प्रसंग पर त्रिदिवसीय आयोजन दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक अट्ठम तप की आराधना के साथ तीन दिन बड़ी पूजा श्री सिद्धचक्र, श्री 108 पार्श्वनाथ तथा श्री ऋषिमंडल महापूजन पढ़ाई जायेगी। इस प्रसंग पर अनेक अतिथि का आगमन होगा।

भागकर शादी करने वाली श्रुति दीक्षा लेगी

पालीताना- श्रुति ने परिवार से भागकर शादी की इसके बाद पुनः लौटकर परिवार में आई। परिवारवालों ने उसे साधु-साध्वी भगवंतों का सम्पर्क कर --- जीवन में परिवर्तन आने से अब श्रुति दिनांक 26 जनवरी को पूज्य जैनाचार्य जयानंदसूरीजी म.सा.की अमृत निश्रा में श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ महातीर्थ में दीक्षा लेने जा रही है।

मुनिश्री पुनितरत्न सागरजी का त्रिदिवसीय संयम अनुमोदना

पालीताना- पूज्य मुनिश्री पुनीत रत्नसागरजी म.सा. के देवलोकगमन निमित्त यहां आगम मंदिर में त्रिदिवसीय भक्ति महोत्सव का आयोजन 11 से 13 नवंबर तक आयोजित किया गया। महोत्सव के अंतर्गत शक्रस्तव पूजन, श्री सिद्धचक्र महापूजन तथा नव्वाणु प्रकार की पूजन पढ़ाई गई। पूज्य आचार्य श्री चन्द्रशेखरसागर सूरीजी म.सा. श्री जिनरत्नसागरसूरीजी म.सा., श्रीचन्द्र रत्नसागरसूरीजी म.सा., श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा., उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री जिनेशचंद्रसागरजी म.सा., मुनिश्री मुनिरत्नसागरजी आदि साधु-साध्वी-वृंद की पावन निश्रा रही।धार की पवित्र धरती पर प.पू.मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी म.सा. के सानिध्य में 28 जनवरी 2007 को दीक्षित होकर पुनीतरत्नसागरजी म.सा. के रुप में धर्म प्रभावना करते हुए वैराग्य पथ पर जीवन को आगे बढ़ाया।16 साल आपने दीक्षा जीवन के बाद पालीताना में 4 अक्टूबर को आपका देवलोकगमन हो गया था।

जालोर में पंचशिखर जिनालय में अंजन प्रतिष्ठा

जालोर- यहां नवनिर्मित पंच शिखर श्री ऋषभ देवप्रभु के जिन मंदिर का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 2 से 8 दिसंबर तक सम्पन्न होगा। पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रविशेखर सूरीजी एवं जैनाचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री नंदीश्वर द्वीप तीर्थ में पंच कल्याणक के मंचीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिनांक 8 दिसंबर को परमात्मा की प्रतिष्ठा के साथ महोत्सव पूर्ण किया।

पू.पं. विरागसागरजी को आचार्य पदवी

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति संघ स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा की आज्ञा से आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य क्रांतिकारी संत प्रवर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। आपकी आचार्य पदवी इसी वर्ष होगी।

पूणियाा सामायिक संगठन ने 25 तीर्थो की यात्रा की

इन्दौर-पुणिया सामायिक संगठन महिला के द्वारा 4 से 9 नवंबर तक 25 तीर्थो की यात्रा करवाई गई। 6 दिन में मध्यप्रदेश, गुजरात के तीर्थो की यात्रा करवाई गई।

✻ जिसका, जिसके साथ जिस तरह का संस्कार होता है, प्रकृति उसे सहज रुप से ही मिला देती है।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य विज्ञानप्रभसूरीजी म.सा के आगामी कार्यक्रम

✻ 4 दिसंबर, मा.सु.-12, को श्री केशर-हेम प्रवज्या मंडप, भिवंडी, भिवंडी निवासी मुमुक्षु निशानकुमारी जयंतिलालजी का दीक्षा समारोह।

✻ 1 जनवरी 2023, पोष सुदि-10 को श्री पंच जिनेश्वर कैवल्यधाम महातीर्थ, ओगणज गिरिविहार के प्रमुख श्री भिखुभाई चिमनलाल चोकसी के स्वर्गारोहण निमित्त पूजा।

✻ 4 जनवरी 2023, पोष सुदि-13 को श्री नेम-मंजुल-वरि-व्रज जैन स्वाध्याय मंदिर, साबरमती पू.सा.मंजुलाश्रीजी की वार्षिक स्वार्गारोहण तिथि निमित्ते महोत्सव।

✻ 13 जनवरी 2023, पोष वदि-6 को श्री सुमतिनाथ जैन श्वे. मू.पू. संघ, बोरसद बंधुबेलड़ी पू. मुनि पुंडरीकप्रभविजयजी म.सा. की द्वितीय वार्षिक स्वर्गतिथि पर गुणानुवाद सभा पू.सा.प्रशांतरसाश्रीजी म.सा. की वर्धमान तप की 100 वीं ओली का पारणा।

✻ 27 जनवरी 2023, माघ सुदि-6, को श्री पारस सोसायटी श्वे. मू. पू. जैन संघ, बरोड़ा श्री शीतलनाथ जिनालय की पुनः प्रतिष्ठा का भव्य कार्यक्रम।

✻ 1 मार्च 2023 फाल्गुन सुदि-10, को श्री केशरहेम प्रवज्या मंडप, भिवंडी, भिवंडी निवासी मुमुक्षु मनिषा कुमारी जवेरीलालजी मुणोत की भागवती प्रवज्या।

मालवा के संतों की पालीताना से उज्जैन-सूरत तक व्यस्त शासन प्रभावक कार्य की श्रृंखला

✻ आगामी चार्तुमास नागपुर वर्धमान नगर में।

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्न सागरसूरी जी,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा का उपधान और नव्वाणु यात्रा के बाद अतिव्यस्त शासन प्रभावक धार्मिक आयोजनों की श्रृंखला है। वाणी जादूगर आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी उज्जैन में अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे तो आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी रिंगनोद में मुमुक्षु श्राविका के दीक्षा महोत्सव में 27 जनवरी को निश्रा प्रदान करेंगे। इसके बाद सूरत के लिये विहार होगा जहां 100वीं ओली पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे। आपश्री का आगामी चार्तुमास नागपुर के वर्धमान जैन श्री संघ में लगभग निश्चित हो गया है। शीघ्र घोषणा होगी। मालवा के श्रीसंघों में भी विभिन्न शासन प्रभावक आयोजन आपके आगमन के समय होंगे। श्रीआनंद चन्द्र अभ्युदय नगर वावपथक धर्मशाला तलेटीरोड़ पर श्रावक से श्रमण बनने की महा तपाराधना उपधान तप की मालरोपण विधि दिनांक 24 नवंबर को सम्पन्न होगी।

200 साधु-साध्वी भगवंत के द्वारा 500 आयंबिल की आराधना एक साथ

मुंबई- -श्रमण परम्परा संवाहक संघावत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्यधार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं पूज्य गच्छाधिपति भ्ह मनोहरकीर्ति सूरीश्वरजी महाराजा के 85 वर्ष की संयम जीवन की अनुमोदनार्थ मंगल स्वरुप जिन शासन के इतिहास में प्रथम बार 200 साधु-साध्वी भगवंतों के द्वारा एक साथ 500 आयंबिल तपाराधना का सामूहिक रुप से शुभारंभ किया गया है। यह यादगार ऐतिहासिक तपाराधना पूज्यपाद संघ स्थविर श्रीजी गच्छाधिपति की 84 वीं दीक्षा तिथि विक्रम संवत 2078 कार्तिक वद-10 दिनांक 19 नवंबर 2022 को शुभारंभ हुई है। पूज्यश्री के संयम जीवन की अनुमोदना में यह अभूतपूर्व आयोजन चल रहा है।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा. का वर्ष 2023 का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।

मुनिश्री देवप्रभसागरजी को प्रर्वतक पद

मुंबई- आंत्रोली कपड़वंज में जन्म लेनेवाले 94 वर्ष की पद एवं 38 वर्ष की दीक्षा पर्याय पूर्ण करनेवाले पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. के मुनि पिताश्री के गुरु पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी महाराजा है जिनकी पुत्री साध्वी श्री हितपूर्णा श्रीजी म.सा. है जो 97 वर्ष की वय तक डोली में नहीं बैठ, मर्यादा और संस्कृति परम्परा को मानने, मनानेवाले पूज्य मुनि प्रवर श्री देवप्रभसागरजी म.सा. को दिनांक 25 नवंबर को संघा स्थविर सागर गच्छाधिपति जिनागम सेवी पूज्यपाद दौलतसागरसूरीजी महाराजा के द्वारा प्रर्वतक पद पर सुशोभित किया जायेगा। भावभरी अनुमोदना।

कुलपाकजी के समीप अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव

कुलपाकजी- पूज्य आचार्य श्री विजय तीर्थभद्रसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में कुलपाकजी के समीप नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी के जिनालय का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 8 से 13 दिसंबर तक मनाया जायेगा। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबमूलजी हरण की प्रेरणा मार्गदर्शन में होने जा रहे प्रतिष्ठा महोत्सव में 11 दिसंबर को दीक्षा कल्याणक वरघोड़ा निकलेगा। दिनांक 12 दिसंबर को प्रतिष्ठा तथा 13 दिसंबर को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी।

✻ सुसंस्कारों के बिना संपत्ति विपत्ति देती है, सद्गति नहीं दुर्गति देती है।

कोठारी परिवार के द्वारा छःरिपालित यात्रा संघ का श्री नेमी से श्री आदि तक आयोजन

झीलवाड़ा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय रविशेखर एवं श्री विजय ललित शेखर सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्री नेमीनाथ प्रभु के महातीर्थ गिरनार से दादा श्री आदिनाथ प्रभु के महातीर्थ श्री सिद्धाचल का छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है। लाभार्थी झीलवाड़ा के कोठारी परिवार के द्वारा अनेश, सुकृत किये है। संघ का आयोजन 29 जनवरी से 11 फरवरी 2023 तक होगा। संघ माल 12 फरवरी 2023 को होगी। इसके पूर्व लाभार्थी परिवार और संघयात्री मुंबई से गिरनार पहुंचेंगे यहां दिनांक 28 जनवरी 2023 को तीर्थयात्रा एवं गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश होगा।

सूरत उमरा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का भव्य छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन

उमरा- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा, बंधुबेलड़ी बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा.आचार्य श्री लब्धिचंद्रसागरसूरीजी, आचार्य श्री सौम्यचंदसागरससूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणीवृंद की अमृत निश्रा में उमरा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। उमरा से संघ का प्रयाण दिनांक 24 नवंबर को होगा। संघ दादा के दरबार में 23 दिसंबर को प्रवेश करेगा एवं 24 दिसंबर को संघ की माल दादा के दरबार में होगी, इसी दिन दादा के शिखर पर भव्य ध्वजा चढ़ाई जावेगी। ध्वजा को बधाने का आयोजन विगत दिनों ध्वजा उत्सव के रुप में मनाया गया। ध्वजा चढ़ाने का लाभ कंचन बहन कीर्तिलाल छोगमलजी शाह परिवार ने लिया है।

द्वारिका में नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा आचार्य पद महोत्सव

मुंबई- द्वारिका में पूज्य आचार्य भगवंत श्री ललितशेखर, श्री मनमोहन श्री रविशेखर, श्री हेमप्रभ, श्री धर्मशेखर श्री जयधर्म सूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में श्री नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ आचार्य पद प्रदान एवं दीक्षा महोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 19 से 24 फरवरी 2023 तक आयोजित महोत्सव में बावन जिनालय प्रतिष्ठा होगी और पंन्यास श्री हर्षशेखर विजयजी म.सा. का आचार्य पद प्रदान किया जायेगा इसके लिये एक स्पेशल ट्रेन से धर्मिष्ठ लाभार्थी भीवड़ी से द्वारिका पहुंचेंगे।

चित्तौड़गढ़ से करेड़ा पार्श्वनाथ का संघ निकलेगा

उदयपुर -मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य श्री निपुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में चित्तौड़गढ़ से श्री करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ भोपालसागर का छःरि पालित यात्रा संघ आयोजित होगा। संघ दिनांक 28 दिसंबर को आरंभ होगा तथा संघ माल 31 दिसंबर को होगी।

1008 अट्ठम, दीक्षा का आयोजन

मुंबई- गिरी विहार परिवार के द्वारा पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री विज्ञानप्रभसूरीजी म.सा. की निश्रा में मुनिश्री पुनितप्रभविजयजी म.सा. के गणि पंन्यास पदारोहण के शुभ अवसर पर 1008 अट्ठम तप का आयोजन दिनांक 26 से 28 नवंबर तक किया गया इसके साथ ही मुमुक्षु कुमारी खुशबू कोठारी की भव्य दीक्षा महोत्सव पर 29 नवंबर को वर्षीदान वरघोड़ा निकाला गया। भागवती प्रवज्या 30 नवंबर को हुई। श्री भगवती सूत्र महापूजन का आयोजन भी हुआ। मुनिश्री को गणि पंन्यास पद दिनांक 28 नवंबर को प्रदान किया गया।

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमास

उज्जैन- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की संभावना है। इस संदर्भ में दिनांक 27 जनवरी 2023 को रिंगनोद में होनेवाले दीक्षा महोत्सव में पूज्य ओली आराधक आचार्य श्री चंद्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में घोषणा होने की संभावना है।

मालव विभूषण पू.अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न- विजयजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

- 4-5 दिसंबर : श्री शीतलनाथ माणिभद्रवीर जैन श्वे.मंदिर द्वारकापुरी इन्दौर में श्री सिद्धाचलजी, श्री गिरनारजी, श्री सिद्धचक्रजी, श्री वीशस्थानक पट्टका भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ।
- 17 से 19 दिसंबर : श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में पौष दशमी के 1008 अट्ठम तप की आराधना।
- 27-28 दिसंबर : श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर, अरविन्दनगर उज्जैन में प्रतिष्ठा की वर्षगांठ, दो दिवसीय महोत्सव।
- 26 जनवरी 2023 : बसंत पंचमी,शिवपुर महातीर्थ मातमोर में श्री माणिभद्रवीर का विशाल भव्य जन्मोत्सव।
- 1 फरवरी : पूज्य अनुयोगाचार्यश्री का 60 वां षष्ठिपूर्ति भव्य दीक्षा दिन समारोह श्री शिवपुर मातमोर में।
- 20 से 22 फरवरी : पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. का 71 वां भव्य जन्म-दिन महोत्सव- श्री जैन श्वे.राऊ, जन्मदिन : 22 फरवरी।
- 1 मार्च : श्री सिद्धाचल वीरमणि तीर्थधाम शाजापुर, श्री आदिनाथ प्रभु की अंजनशलाका प्रतिष्ठा।
- 29 मार्च से 6 अप्रेल तक : 400 तपस्वी साधकों के साथ चैत्रमास की विशाल नवपद ओली आराधना श्री ऋषभदेव छगनीराम जैन श्वे. पेढ़ी, खाराकुआ उज्जैन में।

जैनाचार्य श्री रवि-ललितशेखर सूरीजी की निश्रा में उपधान और संघ का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री रवि शेखर सूरीजी म.सा. एवं श्री ललित शेखर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में पालीताना के मेवाड़ भवन में पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उपधान तप की आराधना का आयोजन प्रथम प्रवेश के साथ 1 जनवरी 2023 को होने जा रहा है, द्वितीय प्रवेश 3 जनवरी का है, उपधान तप की माल 19 फरवरी को होगी इसके साथ ही आपकी निश्रा में श्रीमती लक्ष्मीबाई सराफ परिवार, मुंबई के द्वारा सोनगढ़ से श्री सिद्धाचल का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन 12 जनवरी से होगा, 14 जनवरी को दादा के दरबार में प्रवेश एवं 15 जनवरी को माल होगी।

श्री चंवलेश्वर तीर्थ में अट्ठम तपाराधना

भीलवाड़ा-भीलवाड़ा जिले में चंवलेश्वर तीर्थ में परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक अट्ठम तपाराधना का भव्य आयोजन होने जा रहा है। इस अवसर पर भव्य मेले का आयोजन होगा। इन्दौर के श्री हिम्मतलाल ओढ़वजी गांधी परिवार, मुख्य लाभार्थी है। सभी तपस्वियों का पारणा और बहुमान दिनांक 20 दिसंबर को होगा। श्री कलापूर्णविजयजी प्रर्वतक की निश्रा रहेगी। मार्गदर्शन और प्रेरणा शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण है।

मालवा के 500 जिनालय में 18 अभिषेक

जयपुर- पूज्य साध्वीवर्या श्री सिद्धांत ज्योतिश्रीजी एवं साध्वी श्री अर्हम्ज्योति श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से मालवा के 500 जिन मंदिर में 18 अभिषेक का आयोजन करने की योजना बनी है।

गिरनारजी में 108 नव्वांणु यात्रा होगी

चैन्नई- श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गिरनार महातीर्थ में 108 नव्वांणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यात्रा का आरंभ दिनांक 22फरवरी 2023 को होगा। संघमाल 26 मार्च को होगी।

उपधान तप एवं पौष दशमी आराधना

रानीखेड़ा-श्री पार्श्वनाथ श्वेतांबर जैन तीर्थ में पूज्य आचार्य भगवंत श्री निपुणरत्नसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप और पौष दशमी की आराधना यहां पहली बार होने जा रही है। आराधना डूंगरवाल परिवार के द्वारा करवाई जा रही है। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 18 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 20 दिसंबर को है। पौष दशमी की आराधना दिनांक 17 से 19 दिसंबर को अट्ठम तप के साथ होगी। इस प्रसंग पर परमात्मा का भव्य वरघोड़ा आयोजित होगा।

हमारे तीज-त्यौहार

1- मार्गशीर्ष सुदी-11	शनिवार	3/12/2022	मौन एकादशी एवं महोपाध्याय यशोविजयजी का स्मृति दिन
2- पौष वदी-8	शुक्रवार	16/12/2022	धनार्क कुमुहर्ता आरंभ 9.56 बजे
3- पौष वदी-10	रविवार	18/12/2022	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक
4-पौष वदी-11	सोमवार	19/12/2022	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक

पुष्प नक्षत्र :

आरम्भः- पौष वद-3, दिनांक 11-12-2022, रविवार, समय- रात्री 8.32 बजे से

समाप्तः- पौष वद-4, दिनांक 12-12-2022, सोमवार, समय- रात्री 11.37 बजे तक

पंचक :

आरम्भः-पौष सुदी-5, दिनांक 27-12-2022, मंगलवार, समय- 03.31 बजे से

समाप्तः-पौष सुदी-9, दिनांक 31-12-2022, शनिवार, समय- 11.47 बजे तक

छूटने का अवसरः- *अरे जीव ! संसार में तेरा बहुत समय निगोद के दुःखों में बीता। इसमें से अनंतकाल में बड़ी मुश्किल से त्रस पर्याय प्राप्त की। मनुष्य हुआ, जैन धर्म मिला, सत्समागम, सच्चे संत धर्मात्मा ज्ञानी का महान योग मिला, सत् का श्रवण मिला, समझने जितनी बुद्धि मिली, तो हे जीव ! ऐसे अवसर में परम प्रयत्न करके तेरी आत्मा को तू समझ। अनंतकाल का संसार भ्रमण-नरक निगोद के दुःखों से भरा हुआ-उसके छुटने का यह अवसर है। इसलिये अपने पुरुषार्थ को आत्मा की तरफ झुका।*

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

हमारे प्रतिनिधि :- श्री महेन्द्र जैन

संभवनाथ जैन तप आराधना व आतिथ्य संस्थान

मैन बाजार, पचपदरा सिटी, जिला बाड़मेर-344032

(राज.) फोन- 02988-281918

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

पधारो... पधारो... पधारो...

87000 वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ भगवान की पावन भूमि

श्री भोपावर महातीर्थ में

जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र, तप सम्राट, 103 वीं ओली के आराधक, महामांगलिक प्रदाता, भोपावर तीर्थोद्धारक, जीरावला तीर्थ मार्गदर्शक, वचनसिद्ध महापुरुष, मालवभूषण प.पू. आचार्य देव

श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

की

सप्तम् वार्षिक पुण्यतिथि

गुरु समर्पण महोत्सव

शुभ दिवस : माघ वदी 5, गुरुवार 12 जनवरी 2023

स्नेह निमंत्रण

आईये! गुरु समर्पण महोत्सव मे जुड़ते है और हमारी गुरुभक्ति के कर्तव्य का निर्वाहन करते है

विशेष :

आप सभी पावन अवसर पर अपने-अपने श्रीसंघ में गुरुभक्ति के रुप मे कुछ ना कुछ सद्कार्य अवश्य करें। अधिक से अधिक संख्या मे आयंबिल कर अपनी गुरुभक्ति का परिचय देवें।

निमंत्रक : श्री शांतिनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ ट्रस्ट पेढी भोपावर, तह. सरदारपुर, जि. धार

अध्यक्ष श्री रमणभाई जैन (मोन्टेक्स)

आयोजक : श्री जैन श्वेताम्बर मालवा महासंघ, नवरत्न परिवार

वर्ष 27 | मागसर-पौष | दिसम्बर-2022 | अंक 12 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ____________

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897